M-103

(6)

32

अत्यंत दुष्प्राप्य

30×15

राधा नाम बिरदावली

(किशोरी ~~अलीकृत~~)

पत्र - ५०

१९वीं शती

अन्तिमांश अप्राप्य एवं बीच में भी कुछ पत्र अप्राप्य खंडित

॥नामम्माहात्म्यः॥

॥१॥

॥कलौदशसहस्रांतेहरितज्यतिमेदनी तदर्द्धंजाह्नवीतोयंतदर्द्धं
ग्रामदेवता॥१॥

१ ॥श्रीजानकीवल्लभायनमः॥श्रीरामानुजायनमः॥अथनामविरदावलीलिख्यते॥सोरठा॥श्रीगुरुपदद्वंद्वना
व हियमैधारिशरणंमकरि॥वरनौनामप्रभाव॰ विमलबुधिमोहिदीजिये॥१॥जयराधेसुकुमारि॰जयकृ
पानिधिलाडली॥ललितनामउच्चारि॰ तरिहौमैंभवसिंधुकों॥२॥जयराधागोविंद जयतिकिशोरीरम
ण जय॥जयवृंदावनचंद॰ राधावल्लभरसिकवर॥३॥जयतिजसोमतिलाल॰जयकृष्णनिधिमा
नकी॥इन नामनकीमाल॰ रसनाकोंपहिरायहौं॥४॥जुगलनामसुखधाम॰ मंगलमयमंगलकरन॥
जपिहौंआठौंजाम॰ नरतनकोलाहोलहौं॥५॥जयराधाव्रजचंद॰जयगोरीसांवरेवरन॥जयजयआनं
दकंद॰ ममजीवनेनामावली॥६॥जयमोहनगोपालकुंजविहारीलाडिलो॥नटवररूपरसाल॰ वन
मालीवंशीधरन॥७॥जयजयगोपीनाथजनजीवनिकलिकामे॥जयजसुजसगाय॰ गावतशुक
नारदमुनी॥८॥जयजयनंदकुमार॥व्रजजनजीवनप्रांणधन॥सुंदरस्वछ श्रृंगार रासरसिक राधा
रमन॥९॥जयतिकृष्णजनपालमनमोहनविरदावली॥जयजयपरमदयालनामतिहारोअघ
हरन॥१०॥जयजयश्रीहरिदेव॰ भक्तनकीरक्षाकरन॥परमपातकीलेव तरेतिहारेनामतें॥११॥
जयजयजुगलकिशोर वंकविहारीमनहरन॥किशोरीमेरीओरकृपादृष्टिकवदेखिहो॥१२॥

नामप्रभावअपारगाजतुहैकलिकालमें॥सबसाधनकोसारअगतिनकेगतिदेनकों॥१३॥महिमां
नामअपारबरनिसकैंनहिवेदविधि॥जद्यपिमतिअनुसारनांममहातमबरनिहौं॥१४॥चोपई॥
श्रीगुरुचरणकमलचितलाई॥लिखोंमहातमनामनिकाई॥कलिमेंहरिकोनामअधारा॥जातेत
रेसकलसंसारा॥१॥वरणआश्रमनीचहूजेते॥अधिकारीहरिनामकेतेते॥हरिकोनामनिगम
रससारा॥कलहलकरियेउच्चारा॥पावनतीरथकोटिसमांनां॥भजिहैहरिकोनांमसुजांनां॥
कोटिजग्यतेंअधिकमहातमें॥गावतसुरमुनिसंतसमागम॥३॥कलिमेंनामकीरतनकरिये॥
अनायासभवसागरतरिये॥कोटिकलपतरुसमहरिनांमां॥सकलकांमदायकअभिरांमां॥४॥
कोटिपापकरतानरजेउ॥श्रीहरिनांमउधारेतेउ॥महिमांहरिकेनांमजितीहै॥कापैबरनीजाति
तितीहै॥५॥तदपिकछुकनिजमतिअनुसारा॥शास्त्रप्रमानकरिहौंउच्चारा॥सबसाधनतेंनाम
बडाई॥बहुविधिवेदपुरांणनिगाई॥६॥सोईविधिअबबरनिसुनांऊं॥जापकजनमनमोदब
ढाऊं॥सबसाधनविधिन्यारीन्यारी॥बर्नेनकरौंसुमंगलकारी॥७॥जीवनउधारनमगबहुतेरे॥
कहेशास्त्रमधिबरनिघनेरे॥कर्ममार्गबरन्योंइकनीको॥कह्योभक्तिमगजीवनजीको॥८॥

पुनि मारिग इक ग्यांन विवेका ॥ जोगादिक मग कहे अनेका ॥ सो विचारि जिय देषिय जसें ॥ कर्म भे
द मधि वरनें तसें ॥ ९ ॥ याकलि माहि कहा व निआवे ॥ जसो विधि कहि वेद वतावे ॥ वेदिक कर्म
नि को अधिकारा ॥ संसकार होइ शुद्धि आचारा ॥ १० ॥ विधिवत संसकार कलि मांही ॥ काहू पे वनि
आवत नांही ॥ समय जग्यउपवीत कही है ॥ सोउ जथारथ वनत नही है ॥ ११ ॥ तो तिन कर्मन को
अधिकारा ॥ सो कापे वनि आवत सारा ॥ व्रह्मचर्य विधि वेद वषांनत ॥ सोउ करनी कोउ न करि जां
नत ॥ १२ ॥ ग्रही धर्म जे वेद उचारे ॥ सो विधि कों न यथारथ धारे ॥ वांनप्रस्थ विधि वरनी जसें ॥ सो कलि
मैं वनि आवत कसें ॥ १३ ॥ तुर्याश्रम विधि श्रुति ज्यों गावे ॥ ता विधि की कोउ गंध न पावे ॥ आश्रम धर्म
मैं सव कलि जुग मैं ॥ काहू नि वहन देत न मग मैं ॥ १४ ॥ व्राह्मण के कहे धर्म अपारा ॥ तेउ कलि कीने
भ्रष्ट आचारा ॥ छत्रिधर्म कलि छत्रिन चीन्हें ॥ शूद्र प्राय तिन कों कलि कीन्हें ॥ १५ ॥ वेश्य शूद्र के
धर्म जितेका ॥ तेउ कलि रंच क वनत न येका ॥ जो कदाचि एव निकुं आंवें ॥ कर्म तन मे न वनन यन
हुडावे ॥ १६ ॥ कर्मनि की तो एह विधि गाई ॥ ग्यांन कांड को सुनों उपाई ॥ ग्यांन विधांन मुमुक्षू धारे ॥
श्रुति ता के अवलेकु विचारे ॥ १७ ॥ प्रथम हि कथिन मुमुक्षू होंनों ॥ तव एह मारिग लह सलोंनो ॥ समर

मकबिन तितिसाकारन ॥ दुर्लभ महा ग्यांन को धारन ॥ १८ ॥ विकट योग मग बरनत वेदा ॥ ताके
साधन मे बहु खेदा ॥ कलि मै सोउ न बनत जथारथ ॥ जातें सधै न साचो स्वारथ ॥ १९ ॥ एक भक्ति मग
गहैं सुजानो ॥ तातें होए जीव कल्यानो ॥ ताके नो विधि भेद कहे है ॥ अधिकारिन तें सकल लहे है ॥
२० ॥ प्रथम भक्ति सो श्रवण कहावे ॥ दुतिय कीरतन जिहि स्तुति गावे ॥ सुमिरण भक्ति त्रितिय जन जांनो ॥
पदसेवन चतुरथ हि बखांनो ॥ २१ ॥ अर्चन भक्ति पांचई गाई ॥ छठी भक्ति वंदन सुखदाई ॥ दास्य भक्ति
सप्तम मन हरनी ॥ अष्टमे सख्य भक्ति स्तुति करनी ॥ २२ ॥ आत्मनिवेदन नवमे कहीहै ॥ यह रस पूरि
त सकल मही है ॥ इन के नाम विचारहि कीजे ॥ भक्ति सार सुनिचित धरि लीजे ॥ २३ ॥ श्रवण भक्ति
हित सुनहु प्रवीनो ॥ सो रस वकता के आधीनो ॥ वक्ता मिलै उपासिक जोई ॥ तव जीव हरि सनमुख
होई ॥ २४ ॥ कर्मी जोगी कोरे ग्यांनी ॥ तिहि वक्ता तें होए हित हांनी ॥ व अपनौ ही मत गहरावे ॥ हित नहि
लहि जियहि वहकावे ॥ २५ ॥ मिलै उपासक वक्ता जोहू ॥ सदा श्रवण तो मिलै न तोहू ॥ जित नौं कथा श्र
वण करि लैयो ॥ सोई समय सारथक नैयो ॥ २६ ॥ और समय तो जात वृथाई ॥ यह तो श्रवण भक्ति
विधि गाई ॥ कीर्तन भक्ति मनोहर कहिये ॥ ताकों गुण साहि तिता च हिये ॥ २७ ॥ मन थैर होइ तव सुमि ...

रण होई॥ मनथिरता उ लेन सुनि सोई॥ महा कठिन मनथिरता जांनौं॥ सुमिरण को नहि लक्षि कानौं॥
२८॥ पर सेवन अर्चन विधि नावे॥ समय पाय सो हू बनि आवे॥ सर्व देव सो वनत न हि है॥ सेवा [illegible]
इहि नांति कहि है॥ २९॥ वंदन भक्ति अखंड न होई॥ समय पाइ बनि आवै सोई॥ दास्य भक्ति प्रभु रुचि अ
नुकूला॥ सो वै सकल सुखनि कौ मूला॥ ३०॥ पराधीन यह हृदय हि लेखे॥ अष्ट जांम रत है सुखन विसेखे॥
सख्य भक्ति की महिमा भारी॥ सो प्रभु रुचि सौं होइ अधिकारी॥ ३१॥ आत्म निवेदी न कहु कहावै॥ सो हरि
हू पा होइ तव पावे॥ स्वांमी हित करि जा हि करावैं॥ सोई जन इन भक्ति नकौं पावे॥ ३२॥ पराधीन साध
न हि विचारै॥ नाम महात्म सुनि जिय धारै॥ सब कल्यांन करन सुख साजै॥ कलि मे एक नाम ही गाजै
३३॥ देस काल वय अरु अधिकारी॥ नाम अपेक्षा कछु न विचारी॥ तातें अपनी मति अनुसारा॥ नाम म
हातम करौं उचारा॥ ३४॥ शास्त्र पुरांण वचन मन भावने॥ जीव निके विश्वास वढावने॥ लिखहों
वचन पुरांणनि केरे॥ सुनित रिझे जीव घनेरे॥ ३५॥ कवि विज्ञप्तिः॥ श्लोक॥ वृंदारण्य विलासि वाद्य
व सुतांसं मोद संदोह कृत श्री गोविंद सुवंद्यमान चरितां श्री मल्लिकुंजेश्वरीम्॥ ध्यात्वा नन्य चेत
सदा वविरत ध्याना यमाना यत तत् प्रेष्टानां सुपुरांण वाक्य रचितां नामावली संश्रये॥ १॥ चौ०॥

हरिको नाम मधुर उच्चारै ॥ सब पापनि के मूल उषारै ॥ विष्णुधर्म में महिमा समझाई ॥ सोई हरि भक्ति सुधो
दय गाई ॥ श्रीनारद जू की यह वांनी ॥ रिषि समूह मधि आप बषांनी ॥ हे तुम्हरो अति सय बड भागा ॥
भयो नाम कीर्तन अनुरागा ॥ रसनां कृष्न नाम जब लयऊ ॥ निर्मल हृदय तिहीं छिन भयऊ ॥ हिय अ
नुराग उदय जब होई ॥ पातक दूरि होंहि सब सोई ॥ ज्यों सूरिय को होत उजेरो ॥ उदय करत ही हरै अं
धेरो ॥१॥ विष्णुधर्मोत्तरे हरिभक्तिसुधोदये च रुषीन्प्रति श्रीनारदवाक्यं ॥ श्लो० ॥ अहो सुनिर्मलाय्
येरागो हि हरिकीर्त्तने ॥ अविध्यतमः कृत्स्नं न्रूणं नोदेति सूर्येवत् ॥१॥ चौ० ॥ पाप रूप हिय अनल ये
जरत है ॥ ताको नय नर वृथा करत है ॥ गोविंद नाम मेघ झरत है ॥ ताते सब अनल बुझि जइहै ॥२॥ गारु
डे ॥ श्लो० ॥ पापानलस्य दीप्तस्य मा कुर्वंतु भयं नराः ॥ गोविंदनाममेघोघैर्नाश्यते नीरबिंदुभिः ॥२॥ चौ०
परबस हू गोविंद के नांमां ॥ जो उच्चार करत सुख धांमां ॥ ताके पाप डरपि भजि जांहीं ॥ ताको सुनि दृष्टां
त इहां ही ॥ जैसें त्यारी मृग कों गहहीं ॥ मृग तन में अस संकट सहई ॥ आवत सिंघ देषि वृक भाजै ॥
छूटि जाइ मृग हिय सुख साजै ॥ नाम सिंघ गाजत हिय मांहीं ॥ वृक अपराध सुनत भजि जांहीं ॥३॥ वि
ष्णुपुराणे ॥ अवशेनापि यन्नाम्नि कीर्तिते सर्वपातकैः ॥ पुमान् विमुच्यते सद्यः सिंहत्रस्तैर्मृगैरिव ॥३॥

तोऊताकोहाथजरावै ॥ काशीखंडप्रनावहिगावै ॥१०॥ काशीखंडे ॥ श्लो० ॥ प्रमादादपिसंस्पृष्टो यथा
ऽनलकणोदहेत् ॥ तथौष्ठपुटसंस्पृष्टं हरिनामदहेदघं ॥१०॥ चौ० ॥ जेनरनरकनिकेदुखजांनी ॥
कैरहेअंधमहाअभिमांनी ॥ चितव्याकुलममतावसनयऊ ॥ भ्रमतहिभ्रमतवृथावयगयऊ ॥
ताकौंइकहरिनामसहारो ॥ सबपापनिकौभंजनहारो ॥ इहिविधिसमरथनामहिगायो ॥ वृहद
नारदीयइहसमकायो ॥११॥ वृहन्नारदीये ॥ श्लो० ॥ नराणांनिरयांधानांममताकुलचेतसां ॥ एकमे
वहरेर्नामसर्वपापविनाशनं ॥११॥ चौ० ॥ चौरकिहूकीवस्तुहिचोरहि ॥ पीछेंधनीकरततहांसोर
हि ॥ हरिहिहरिहरैंहरैंलेजाई ॥ ऐसेवचनकहतदुखदाई ॥ योंहरिनामविवसउच्चरै ॥ मातुगर्भसो
फेरिनपरै ॥ सुनिअंसहूहरिनामउचारन ॥ चित्रगुप्ततवलग्योविचारन ॥ याकेनामहिकागद
माही ॥ लिखिवेमैंअवआवतनांही ॥ वृहन्नारदीमेइहवांनी ॥ धर्मराएसोईआपवषांनी ॥ वृ
हन्नारदीये ॥ यमवाक्यं ॥ श्लो० ॥ हरिर्हरिस्सकृदुच्चरितंदस्युच्छलेनयैर्मनुष्यैः ॥ जननिजठरमार्गलु
प्तानममपटलिपिंविशंतिमर्त्याः ॥१२॥ चौ० ॥ हत्याअयुतकरीजिहिहोई ॥ अगणिततनग्रपापकरसो
ई ॥ गुरुअंगनाकोटिजिहिसेई ॥ कोटिनातिचोरीकरजेई ॥ ऐसोकूपापीयहविधिकरई ॥ हरिप्रिय

गोविंद नाम कु[illegible]ती॥ [illegible]हु सुनाई व[illegible]ला॥ [illegible] दुख नासे परम कृपाला॥ पद्मपुराणे महातम
जांन्यो॥ नारद ज्यू [illegible] पद्मपुराणे श्रीनारदवाक्यं॥ श्लोक॥ हत्वा सुतं पापसह
स्त्र मुग्रं गुर्वंगनां [illegible] स्तेय [illegible] नेकानि हरिप्रियेण गोविंद नाम्नानि हतानि सद्यः॥
१३॥ चौ०॥ जांनें विन कु आगिकों गहई॥ तोउ अग्नि दाह्य कों दहई॥ पुत्र नाम मिस हू कहि आवे॥ द्व
रि के नाम सुदी फल पावे॥ गोविंद नाम करत उचारा॥ जर अनल ज्यों पाप पहारा॥ पद्मपुराणे वच १८
न एह कह्यो॥ सो सुनि हरि न क्ति निसु खल हौं॥ पद्मपुराणे॥ श्लो०॥ अनेच्छया पि दहति स्पृष्टो हुत
वहो यथा॥ तथा दहति गोविंद नाम व्याजादपीरितं॥ १४॥ चौ०॥ श्री कृष्ण नाम कीरतन करिकें॥ पा
प विलाय जांहि जरि वरिकें॥ जेसें सूरय उदय प्रकासें॥ अंधकारकों ततछिन नासे॥ कृष्ण नाम महि
मां मनहरनी॥ पद्मपुराण विविधि विधि वरनी॥ १५॥ पद्मपुराणे॥ श्लो०॥ कीर्तनादेव कृष्णस्य विष्णो
रमिततेजसः॥ दुरितानि विलीयंते तमांसीव दिनोदये॥ १५॥ चौ०॥ हरि कीर्त्तन समान कलि मांही॥
पपहरन प्रायश्चित नांही॥ हरिको नाम महातम यहई॥ पद्मपुराण अनूपम कहई॥ १६॥ पद्मपु
राणे॥ श्लोक॥ नान्यत्पश्यामि जंतूनां विहाय हरिकीर्त्तनं॥ सर्वपापप्रशमनं प्रायश्चित्तं द्विजोत्तम॥

॥१६॥ चौ०॥ यह जु अजामिल अति अघरासी॥ महाघोर नरक निको वासी॥ कोटिजनम के पापनि केरो॥ र
प्रायश्चित शुद्धि कस्यो घनेरो॥ विवकुं नाम उचारण कीयो॥ मुक्तिरूप भयो निर्मल हीयो॥ केवल पाप
मात्र न हि हरई॥ मंगलरूप लेत तिहि करई॥ षष्ट स्कंद मांहि यह बानी॥ हरिदास निज मन अटनि बखा
नी॥१७॥ षष्ट स्कंध येयमदूतन प्रति विष्णुपार्षदानां बाक्यं॥ श्लो०॥ अयं हि कृतनिर्वेशो जन्मकोट्यंहसा
मपि॥ यद्व्याजहार विवशो नाम स्वस्त्ययनं हरेः॥१७॥ चौ०॥ कहै कदाचित को ऊ असे॥ महापापए
मिटि है कैसैं॥ बारहजार नि किये अघाई॥ कोटि प्रायश्चित न किये न जाई॥ इक हरि नाम हि विवस
उचरई॥ महापाप तें कैसें न रई॥ विष्णुपारषद प्रु निसम झावै॥ नाम नाव अपार लषावे॥ मदि
रा पान करै गु निचोरी॥ मित्र द्रोह ब्रह्मघ्न बहोरी॥ और पाप बहु करत सदी है॥ सब पापनि सोध
क सु एही है॥ श्रेष्ट प्रायश्चित यह कहि दीनों॥ नाम उच्चारण सब रस भीनों॥ नाम लेन वारे जन जेई॥
तिन को हरि अपनो [illegible] स्तेई [illegible] न्यो ब्रतधारी॥ याकी सब कर नी रखवारी॥१८॥
श्लो०॥ स्तेनः सुरा[illegible] वेशो [illegible] त्सी॥१२॥ चौ० [illegible]ः॥ स्त्रीराजपितृगोहंता ये च पातकिनोऽपरे॥ सर्वे
बाम [illegible] जिहि सेई॥ कोटि नाम ति [illegible] द्विषयामतिः॥१८॥ चौ०॥ नाम

श्रेष्ट ताऐसी बरनी॥ [illegible] ही॥ यह तु नाई व[illegible] र नी॥ व्रत नियमादिक ही विधि सबही॥ प्रायश्चित्त व खो
नै सबही॥ ते व्रत वि[illegible] प्राश्चि[illegible] ता कै [illegible]ध कवकु न हि होई॥ नाम लेत ही मात्र जबै ही॥ तत छण
सुद्ध होत नर तेही॥ हरि [illegible] नाव है जोई॥ ताकौं नाम जतावत सोई॥ विष्णु पारषद बरनत ऐसैं॥
सो विधि सरस लिखी मैं तसै॥ १९॥ श्लो०॥ न निष्कृतैरुदितैर्ब्रह्मवादिभिस्तथा विशुद्धत्यघवान्व्र
तादिभिः॥ यथा हरेर्नामपदैरुदाहृतैस्तदुत्तमश्लोकगुणोपलंभकं॥ १९॥ चौ०॥ अजामिल तो सुत
हितु कास्यो॥ नाम जो नित हि कवै उचास्यो॥ यम किंकर जो यह मत गंनै॥ विष्णु दास तहां वकु रवि
खांनै॥ सुत संकेत हि नाम हि लेई॥ करि परिहास कहो सुनि तेई॥ गांन अरु लाप कहो कोउ कसैं॥ हरि
सुक हा होइ कहो अरसैं॥ हरि हरि कहत निरादर करई॥ श्री हरि नाम पाप सब हरई॥ २०॥ श्लो०॥ सांकेत्यं
पारिहास्यं वा स्तोभं हेलनमेव वा॥ वैकुंठनाम ग्रहणमशेषाघहरं विदुः॥ २०॥ चौ०॥ जो कदाचि जम [illegible]
कर कहई॥ यह विधि हम मां निन गहई॥ अजामेल सुत हित चित दीनौं॥ यह संकल्प कहो कव [illegible]
नौं॥ हे हरि हरि यि पातक मेरो॥ नारायण मैं तुम्हरो चेरो॥ यह तो जो निन दीह रिटैरे॥ कैसे पाप [illegible]त
हि केरे॥ तहां जय विजय तिन हि समझावहि॥ नाम श्रनाव अपार लखावै हि॥ कंचेतें को उक्कं गव

तहां हरिनाम सुमुख उच्चरई॥ अखुटे परे मारि गमै कोई॥ तहां सुखनाम उच्चारण होई॥ चौट
हो सुधि नरहावै॥ तब हू कृस्न कृस्न कहि आवै॥ काटै बीछी सांप जहां कं॥ नारायण हरि कहै
कं॥ जुर हू चढत नाम मुख धारै॥ हरि हरि कहै जहां कोउ मारै॥ ऐसें कु विवस नाम मुख नाषै॥ व
नयापतन स्न करि नाषै॥ असी कुसमय नाम कहि आवै॥ सो नर यम जातनां न पावै॥२१॥ श्लोक॥ पतितः
स्खलितो भग्नः संदष्टस्तप्त आहतः॥ हरिरित्यवशेनाह पुमान्नार्हति यातनाः॥२१॥ चौ०॥ जो कछु
यमगन ऐसे कहई॥ यह संदेह हमारें रहई॥ कृस्न नाम यह कव ही जांन्यो॥ नारायण सुत नाम वषा
न्यो॥ इहि के पाप गए सव कैसें॥ नाम प्रताप सुनौं तहां ऐसें॥ जानि ले कु विनु जानें कोउ॥ नाम महा
तम सुनियै सोउ॥ हरि को नाम अषिल अघ जारै॥ विनु जांनि हूं जा हित उचारै॥ जैसें भोरो बालक को
ई॥ आगि निहाथ मेलि कै सोई॥ कैष्ट समुद्र मांहि सो डारै॥ कहा हूंता सन यह विचारै॥ इहि बालक मो
हि इहां गिरायो॥ मो पें [illegible] न जात [illegible]॥ इहि विधि कछू न अगिनि विचारहि॥ डारत प्रीति निका
ठ नि जारहि॥ दोह [illegible] त्यौ॥२२॥ चौ[illegible]॥ जो निजु जांनि न करत विचारा॥ जो निजु जांनि नाम
को उ लेई॥ सो ंस [illegible] हि सेई॥ कोटि नांति [illegible] नाम को [illegible] नि काई॥ गाजि गाजि कें अंक सुनि गाई॥२२॥

वृहन्नारदीयपुराण भाषा

॥ भक्ति सुधोदय मांही ॥ यद्वस्तु नाई व... ॥ संकीर्त्तितमघंपुंसो दहे देधोयथानलः ॥ २
२ ॥ चौ० ॥ ... ति है लवी ॥ आधा व... ता को द्रोह हत्यारो ॥ पसु दिंसक गो हत्या करई ॥ पूजन को मारत न
हिं डरई ॥ स्त्रीनमं सरंधन कौं ... श्रति डांडा लसु अघी अघाई ॥ असे कुमहापातकी जेई ॥ क्रियसुद्ध हरी
नाम कितेई ॥ षष्ट स्कंध भागवत गायो ॥ नाममहातम रिखिन सुनायो ॥ २३ ॥ श्लो० ॥ ब्रह्मा ला पित हा गो घ्नो मा
तृहा चा र्य हाघवान ॥ स्वादः पुष्कसको वापि शुद्धेरन्नयस्यकीर्त्तनात् ॥ २३ ॥ चौ० ॥ अवन रपापकरतदे
तेउ ॥ जे अघ कियेजन्मपद्दलेउ ॥ अरु अघकरिहैजन्मपरिजंता ॥ कलि कृत कलिमल क्रियअनंता ॥ जि
ते पाय इक मेरे करई ॥ गोविंद नाम लेत सब दरही ॥ ज्यों रूई कौं अग्नि विनावे ॥ अगनि तनक सी ताहिं जरावे ॥
लघु भागौत कह्यो यह हेत ॥ कलि मैं नाम प्रभाव है सेत ॥ २४ ॥ लघु भागवते ॥ श्लो० ॥ वर्तमानंतु यत्
पापं यत् भूतं यत् भविष्यति ॥ तत सर्वं निर्दहत्याशु गोविंदानलकीर्तनं ॥ २४ ॥ चौ० ॥ महा पातकी कामी
क्रोधी ॥ सज्जनजनकौ सदा विरोधी ॥ असे अघ जिहिं भरे भंडारा ॥ करे सुद्ध हरिनाम उचारा ॥ लघु भागौत
कहु रिखिस कहिक ॥ यहै वचन मैं इह कहि गहिक ॥ २५ ॥ श्लो० ॥ सदा द्रोहपरो यस्तु सज्जनानां महीत
ले ॥ जायते पावनो धन्यो हरेर्नामानुकीर्तनात् ॥ २५ ॥ चौ० ॥ कोटि न सज्जनन्नूतलमांही ॥ प्राणी केहि गय

ना०
८

सतसदांही॥ कृष्णनामसमहितू नकोई॥ यकुहेतत्व सुनिलेसोई॥ सज्जनन्वारथीसेवा चाहे॥ बिनुस्वारथ
तेहीनरदाहे॥ कृष्णनामजवहीउचरैहै॥ सेवा बिनुहिकृतार्थकरैहै॥ कूर्मपुराणवचनयहगायो॥ श्रा
णिनकेनाग नितेपायो॥२६॥ कौर्मे॥ श्लो०॥ वसंति यानि कोटिस्तु सज्जनानांमहीतले नतानितत्तुलांयां
तिकृष्णनामानुकीर्तने॥२७॥ चौ०॥ इतेपापनरकसैंकरिहै॥ एकनामजेतेअघहरिहै॥ नामसक्तिअघ
हरजसगावै॥ तितेपापकापैंबनिआवैं॥ विष्णुपुराणवृहदकीवानी॥ यहईविधिमेहितकरिमांनी॥२
७॥ वृहद्विष्णुपुराणे॥ श्लो०॥ नाम्नोऽस्ययावतीशक्तिःपापनिर्हरणेहरेः॥ तावत्कर्त्तुनशक्नोतिपात
कंपातकीजनः॥२८॥ चौ०॥ चांडालहूतैंइतनेंपापा॥ संचयेकरनौंअतिहिदुरापा॥ श्रीहरिनामजिते
अघजारे॥ इतनेपापसुपचकहाधारै॥ इतिहासोत्तममहिमाधरी॥ सोईविधिलिखिवकह्यौविस्तरी॥
२९॥ इतिहासोत्तमे॥ श्लो०॥ स्वादोपिनहिशक्नोतिकर्त्तुंपापानिपातकी॥ यावतीशक्तिरस्तीहविष्णोर्नाम्नो
ऽघनाशने॥ [illegible] रिखिविचारो॥ जीवनिइकहरिनामसहारो॥ कंइकवाचिकमन
[illegible] रहि॥ दा[illegible] पापकोंनकलिमांही॥ गोविंदनामलेतनहिजाही॥ सबपाप
कृत[illegible] लई॥ त्योंस[illegible]हिसेई॥ कोटिनो[illegible]॥ स्कंदपुराणे॥ श्लोक०॥ तन्नास्तिकर्मजंलोके ऽऽ

महिमां भक्ति सुधोदय मांही॥ यहस्तु नाईवर नितहांही॥३५॥ हरिभक्तिसुधोदये॥श्लो०॥नचैवमेकंव
क्तारं जिव्हा रक्षति वैष्णवी॥ आश्राव्य भगवत् ख्यातिं जगत्कृत्स्नं पुनाति हि॥३५॥चौ०॥कृष्णचंद्रघन
स्यांम कन्हाई॥ है व्रजजीव निजन सुखदाई॥ जो नर तुम्हरे नाम उचरही॥ आप सहित कुल पांवन कर
ही॥ जिनके श्रवन परै हरि नामं॥ ते अगणित सुचि कै सुखधांमं॥ होंहि पवित्र सुनत ततकाला॥ असो
तुम्हरो नाम रसाला॥ तिहिं नांमी निज चरण सुहायो॥ जगपांवन मो अंग लगायो॥ सरप जो नित तब छित
विसराई॥ सुंदर देव देह मैं पाई॥ यामैं करीय अचंभो कसो॥ चरन परस पांवन कर जासो॥ यह गंधर्व सुदर्से
न कहई॥ वदन कमल निरखत सुख लहई॥ कृष्णचंद्र थुति निरमल वांनी॥ दशम मांहि सुचि रुचिर व
खानी॥३६॥ दशमस्कंधे सुदरसन वाक्यं॥श्लो०॥ यन्नाम गृह्णन्नखिलान् श्रोतॄनात्मानमेव च॥ सद्यः
पुनाति किं भूयस्तस्य स्पृष्टः पदा हि ते॥३६॥चौ०॥ सब ब्रांणिन के वेही संता॥ सो बंधु जो नित ईमिंता॥
[illegible] हरि नर आनंद लहई॥ जो हरि नांम उचारण करई॥ यह नरहरि श्रीरांण मधि टांनी॥ महिमां जनवद
त्यो
[illegible] वेखांनी॥३७॥ नारसिंहे श्रीवक्रादवाक्यं॥श्लो०॥ते संतः सर्वभूतानां निरपेक्षा [illegible] कबांधवाः॥ [illegible]
वनंनकीना॥ [illegible] ६
[illegible] कैमुदा चिंता॥३७॥चौ०॥ श्रीसहि नरहरि नाम नचा [illegible] गावें [illegible] उसां॥ ८

ना० ...नेखवजसुनौंअवनदैसोई॥ हेअच्युतगोविंदअनंता॥ सव[illegible]कहुवारय
८ सत[illegible]ननोमेनिमुखनाखतजवही॥ सकलरोगडरिनाजहितवही॥ सत्यसत्यरुजहरनसहीहै॥ औ
दराजकीधारणहीहै॥ वहदनारदीयहविधिवरनी॥ औषदिनवरोगनिकीहरनी॥ इत्यावृहन्नारदी
ये॥ श्लो०॥ अच्युतानंतगोविंदनामोच्चारणभेषिता॥ नश्यंति सकलारोगाः सत्यं सत्यं वदाम्यहं॥ ३८॥
चौ०॥ जिहिरोगीतनरोगअनेका॥ औखदिखातजातनहिएका॥ सोरोगीहरिहरिसुखकहई॥ महा
धि रसायनऔखदियहई॥ पानकरतसवरोगनसाई॥ याविधिमेंसंसयकछुनाही॥ पारासरसंहिता
जनाई॥ यहऔखदिजगकौंसुखदाई॥ व्याससदेवजूकी यह वांनी॥ कहीसांबजूसौंसुखदांनी॥ ३९॥
परासरसंहितायांशांवंप्रतिव्यासोक्तौ॥ श्लो०॥ नश्यंव्याधिजंदुःखंहेयं नान्योषधैरपि॥ हरिनामौष
धंपीत्वाव्याधिस्त्याज्योनसंशयः॥ ३९॥ चौ०॥ मनकीचिंताआधिकहीहै॥ व्याधिसरीरनिरोगसदीहै॥
सुमिरणनामकीरतनकरई॥ आधिव्याधिसवतिहिछिनहरई॥ हरिकीरतनसुमिरतपलजेही॥ चि
तचिंतानासैपहलेही॥ नामउचारतहीमुखमांही॥ सवसरीरकीव्याधिविलांही॥ अमितसक्तिजि
हिकौहैनांमां॥ तिहिनामीकौंकरौप्रनामा॥ यहसकंदमहिमांनिधिगाई॥ रोगहरनऔषधीवताई॥

[illegible]आधयो व्याधयो यस्यस्मरणान्नामकीर्त्तनात्।।तदैव[illegible]
[illegible]मा म्यहं।।४०।।चौ०।।नारायणकौनामएककही।।रोगदोसनासेकितेकही।।हरिकेनामसुमुखअरु
राज्यादिककेसबनयहहरई।।वन्हिपुराणवचनयहकहई।।वडभागीयहश्रोषधिलहई।।४१।।वन्हिपुराणे
श्लो०।।महाव्याधिसमाक्रान्तोराजवाधोपपीडितः।।नारायणेतिसंकीर्त्यनिरातंकोभवेन्नरः।।४१।।चौ०।।दु
खतैंहरिनामछुडावै।।सर्वरोगकौनामनसावै।।सकलकलेसउपद्रवहरई।।अपमृत्युरिष्टतिहिदेषत
डरई।।करतहिहरिकोनामउचारा।।एतेदुषजरिवरिकुंइछारा।।विस्नुपुराणअहदइहिविधिकौ।।व
रनतहैसाधनकीसिधिकौ।।४२।।वृहद्विस्नुपुराणे।।श्लो०।।सर्वरोगोपशमनंसर्वोपद्रवनाशनं।।शांतिदं
सर्वारिष्टानांहरेर्नामानुकीर्त्तनं।।१।।ब्रह्मवैवर्ते।।सर्वपापप्रशमनंसर्वोपद्रवनाशनं।।सर्वदुखक्षयक
रंहरिनामानुकीर्त्तनं।।४२।।चौ०।।हरिकीर्त्तनजुनिरंतरकरई।।ताकेचितमेहरिअनुसरई।।सबदुषह
रिकरिकेंयौंनसैं।।सूर्योदयतिमिरनकौंनसैं।।जसैंपवनचलप्रचंडा।।सबवादरनिकरैंसतषंडा।।
त्यौंरसनाहरिनामनिवासा।।हियनिर्मलज्यौंहोएअकासा।।द्वादसमांहिवचनरसभीनों।।सूतपुराणी
वर्ननकीनौं।।४३।।द्वादशस्कंधे।।श्लो०।।संकीर्त्यमानोभगवाननंतःश्रुतानुभावोव्यसनंहिपुंसां।।

ना०
११

प्रविश्यचित्तंविधुनोत्यशेषंयथातमोऽर्कोऽभ्रमिवातिवातः॥४३॥चौ०॥काहूनैंविसखायोहोई॥ताकुख
तैंआकुलजरिसोई॥विवसहूताहांहरिनामहिकहई।होइसुखीसोईमुदलहई॥होइदुखीअतिदारिद
दुखतैं॥तवहूहरिदरिनाखेसुखतैं॥विपतिकालजुहरिदसिनाखे॥तहांहरिहाथछत्रकरिराखे॥सि
घहिदेषिमहाभयलागै॥बीछूसाइखड्गभयभागै॥तहांहरिनारायणकेसो॥तनकनामउचरैकोउजो
सो॥सबदुखदहैनिमषइकमाही॥सुखीहोइसुनिहरिपुरजांही॥विष्णुधरमसबहीविधिजांनै॥सोयह
नामप्रभावबखांनै॥४४॥विष्णुधर्मोत्तरे॥श्लोक॥आर्त्तोविषन्नाशिथिलाश्चभीताघोरेषुचव्याधिषुव
र्तमानाः॥संकीर्त्यनारायणशब्दमेकंविमुक्तदुःखाःसुखिनोभवंति॥४४॥चौ०॥देवनिकेअधिदेव
गोविंदा॥तिनकोनामसकलसुखकंदा॥हरिअविंदएहनामउचारै॥इतेअरिष्टनितुरतनिवारै॥राक्ष
सजक्षभूतबिताला॥प्रेतविनायकडाकिनिजाला॥सबअनर्थकरताहैजेते॥कहांलगिवरनिसुनाहे॥
तेते॥हरिकोमलधुनिसुनतसुहाई॥भाजिजांहिसबभयसमुदाई॥सकलअनर्थहरनसुखगाजै॥चे
हिकंमलनमलविराजै॥विष्णुधरमउत्तरएहवरनी॥सोईसाखिलिखीमनहरनी॥४५॥श्लोक॥सकिंजि
गहरसाश्रोयःधीवताः

...वं नारसिंहे तेजसः॥ यक्षराक्षसवेतालभूतप्रेतविनायकाः॥ १॥ डा॥ [illegible] [illegible]न
[illegible] वहिंसकाः॥ सर्वानर्थहरं तस्य नामसंकीर्तनं स्मृतं॥ ४४॥ चौ०॥ क्षुधा प्यास सों पिड [illegible] होई॥ तव
हरिनाम उचारै कोई॥ अखुटि परै तव हू हरि नाखे॥ सकल अनरथ दूरि करि नाखे॥ या मकछु संदेह न
ही है॥ विष्णुधर्मोत्तर साखि कही है॥ ४५॥ श्लो०॥ नामसंकीर्तनं कृत्वा क्षुत्तृट्प्रस्खलनादिषु॥ वियोगं शी
घ्रमाप्नोति सर्वानर्थैर्न संशयः॥ ४६॥ चौ०॥ अग्यान सों जीव संसारी॥ महा सक्त अति होत दुखारी॥ पुत्र क
लित्रादि कहित जो न्यों॥ वंध्यो मोह ममर्त लपटान्यो॥ मोह अनल तिहि महा दहत है॥ तातें जीय धीर जन
रहत है॥ तिन प्रति मोहानल की ज्वाला॥ जरत लोक तिहि दे षि विहाला॥ कृष्ण नाम सोई स्याम घटा है॥
गौर स्वामिनी नाम छटा है॥ तिहि अंवुद की छाया आवे॥ मोह अनल कों तुरत बुझावे॥ पद्मपुराण सा
षि समझाई॥ यह विधि हिय मैं रैं अति नाई॥ ४७॥ पाद्मे॥ श्लो०॥ मोहानलोल्लसज्ज्वालज्वल्लोकेषु सर्वदा॥ ल
यन्नामांभोधरच्छायांप्रविष्टो नैव दह्यते॥ ४७॥ चौ०॥ कलि की बाधा नाम ही हरई॥ नाम जपै सोई भव
निधि तरई॥ कलि रूपी खोटो अहि ताके॥ विसकी तीखी डाढा जाके॥ गोविंद नाम लेत पुलकांही॥
तिहि अहि को रंच कडर नाही॥ कलि अहि कों नाम अनल दाहै॥ कहत स्कंदपुरान वमहा है॥ ४८॥

ना०

१२ स्कांदे॥श्लो०॥कलिकालकुसर्पस्यतीक्ष्णदंष्ट्रस्यमाभयं॥गोविंदनामदावेनदग्धोयास्यतिभ
स्मतां॥४८॥चौ०॥इहिकलिमांहिचतुरनरसोई॥नरहरिनामपरायणहोई॥नरकृतकृत्यमां
नियेतेई॥कलिबाधातिहिनयतनहिदेई॥वृहदनारदीकीयहवांनी॥दृढहियधारिसुधारससा
नी॥४९॥वृहन्नारदीये॥श्लो०॥हरिनामपरायेचघोरेकलियुगेनराः॥तएवकृतकृत्याश्चनकलि
र्बाधतिहितान्॥४९॥चौ०॥हेहरिहेकेसवगोविंदा॥वासुदेवनरहरिनंदनंदा॥इननामनिउ
चरेनरकोई॥कलिबाधाकछुतिनहिनहोई॥५०॥श्लो०॥हरेकेशवगोविंदवासुदेवजगन्मय॥
इतीरयंतियेनित्यंनहितान्बाधतेकलिः॥५०॥धरिदृढव्रतजेतरनहिपरई॥वासुदेवनित
कीर्तनकरई॥कलिबाधाकछुतिनहिनव्यापे॥तिनकेडरकलिथरथरकांपे॥विष्णुधर्मोत्त
[illegible]॥मध्रभावा॥वर्ननकरतहरखितचितचावा॥५१॥श्लो०॥येऽहर्निशंजगद्धातुर्वासुदेवस्य
[illegible]र्तनं॥कुर्वंतितान्नरव्याघ्रनकलिर्बाधतेनरान्॥५१॥चौ०॥परमनारकीजीवजितेका॥
त[illegible]तिनउधारनकोमगएका॥कृष्णनामसबकोंउद्धारै॥यहविधिवासुदेव[illegible]नतारे॥१॥सु
हिकोहैनो[illegible]॥नाममहातमसबबिधिजांन॥नाममहातमके[illegible]बाधौचतार्य

क

...नेहवारी ॥२॥ श्री नारद जू हरि दि पियारे ॥ सव लोकनि के विचरन हारे ॥ हरिगुन गान
के ... वारे ॥ एक समै वैकुंठ पधारे ॥३॥ रमानाथ को दरसन कीनौ ॥ गायो गुन आनंद रस भीनौ ॥
तहां ते मांगि विदा प्रभु पासा ॥ इंद्र लोक आय हरिदासा ॥४॥ इंद्र तहां आति आदर कीनौ ॥ पद पखारि
चरनोदिक लीनौ ॥ सादर सिंघासन वैठारे ॥ मधुर मनोहर वचन उचारे ॥५॥ खटरस विंजन भोगल
गाय ॥ धूप दीप वहु भांति जगाये ॥ करी वीनती सहित सनेहा ॥ कियो पुनीत आज मम गेहा ॥६॥ रिवि
वोलि वांनी रसपागी ॥ कह्यो इंद्र सों अति वड भागी ॥ नित उपेंद्र जू कों द्रग देषै ॥ जीवन जन्म सुफल
इहि लेषै ॥७॥ असे ही सव लोकनि मांही ॥ सैल करत विचरत मुनि जांही ॥ तव नारद जू यह विचा
री ॥ सव देवनि की पुरी निहारी ॥८॥ अव कहां चलिये चित यह आंनी ॥ गावत हरिगुन अंम्रत वांनी ॥
तव मन मै यह हेत विसेरव्यो ॥ हम जमलोक कवहूं न हि देरव्यो ॥९॥ देखे रचना वहां कहा है ॥ धर्मराए
छु नक्क महा है ॥ चरचा तिहि सों करि हैं जाई ॥ चलि तहां सव नर्क व चाई ॥१०॥ यह विचारि रिषि तहांप
धारे ॥ जमपुर की ढिग नर्क निहारे ॥ तहां पापी अति त्रास पुकारत ॥ जम किंकर वहु विधि तहां मारत ॥
कोटिन जीव नर्क के मांही ॥ महा दुषी अतिसय विललांही ॥ अपने पाप न की सुधि करिकैं ॥ हा हा का

ना०
१३ करत डरडरि कैं ॥१२॥ तिनकी वेद निदेषि न जाई ॥ चित में कृपा उदय होइ आई ॥ गहेरदे तहां कियो
विचारा ॥ नारद जू करुणां आगारा ॥१३॥ महा प्रबल श्री हरि की माया ॥ तिहि वस दुखी सु जीव निकाया ॥
लख चौरासी भ्रमत सदाई ॥ सुख को गंध कहूं नहि पाई ॥१४॥ सिद्ध मंत्र नारायण नामो ॥ सुमित सक
ल सुमंगल धामो ॥ जो मन आपने वस है सोऊ ॥ प्राणी नर्क नि भोगत तोऊ ॥ बडो अचंभो आवत यो है ॥
जीव अभागी दुःखित क्यों है ॥ यह जिय हरि हरि क्यों न उचरई ॥ नरक कूप जाके डर तैं डरई ॥१५॥ श्लो० ॥
नारायणेति मंत्रोस्ति वागस्ति वशवर्त्तिनी ॥ तथापि नरके घोरे पतंतीत्येतदद्भुतं ॥१५॥ चौ० ॥ हीन क
र्म करतौ पापी नर ॥ दुष्ट आलसी जिनहिं न जमडर ॥ हरिनाम प्रीति जिन जीव न होई ॥ और तिनहि गति
नांहि न कोई ॥१६॥ श्लो० ॥ पापिनां कर्महीनानां अलसानां दुरात्मनां ॥ जीवनं हरिनामैव गतिर्नान्या हि
विद्यते ॥१६॥ चौ० ॥ यह विचार करि अति दुख पाई ॥ त्रसित जीव लखि करुणा आई ॥ व्याकुल चित
ह्वै यदयां विचारी ॥ ऊंचे सुर करि वीन सुधारी ॥१७॥ चढि कैं चैक करुणां रस पागे ॥ गिरधर के गुन गावन
लागे ॥ सदय हृदय नारद कै आयो ॥ हरिनामामृत इहि विधि गायो ॥१८॥ श्लो० ॥ गोविंद नाराय
[illegible] केशव अच्युत माधवेति ॥ नृसिंह देवेंद्र हरे मुरारे रमेश लोकेश जगन्निवास ॥१९॥

...श्रीशः ...समस्तलोकेशनिधानमूर्ते॥ निरंजनानंतगुणाकरेश चिद्रूपनिःकर्त्ता तेई॥ वासुदेव
निरूप...व्ययनिर्विकार निराश्रयानंत विचित्रकर्मन्॥ दाशार्ह कृष्ण खगवाहन ...मिरतलक्ष्म परममुक्ति
लगुरो जगतामधीश॥२१॥ विश्वोदयस्थितिलया निमति प्रदेति गायन्नुमोदमुदमत्वं वासुदेव स्पकीर्त्ति
चौ०॥ नारकी नर्क श्रवननि मांही॥ नर्क निमें धुनि छई तहांही॥ जमके पास अपद॥ मन एकाग्र होंन जव
नरहे॥२३॥ अष्टविंस नर्कनिके मांही॥ खरनर परी सुवर्नि न जांही॥ दिव्य स्वरूप अश्या सनपे वो॥ ता
नि निज नयन निहारे॥२४॥ कटक किरीट माल मणि राजे॥ शंख चक्र आयुध कर साजे॥ एक कहों शिव सां महि
दरसन करत देवतिय मोहे॥२५॥ पुष्पक विमान अनेकनि मांही॥ चढि चढि नारद रिखि...शिवो सांम सेवा दे॥ श्लो-
नक रिकें॥ जमदूतन के सिरपग धरिकें॥२६॥ दिव्य धाम वैकुंठ पधारे॥ सवे नर्कके नर्क तलो वरं॥११८॥ चौ०॥ जि
व विराजे॥ हरिमुख निरखि सुखी होइ गाजे॥२७॥ कियई पति तिते तिहि पुर मांही॥ तं सुख साजे॥ सदा सर्वदा
ही॥ नाम अनाव अगरद रसाये॥ महा असाधारण फल गाये॥२८॥ ऐसे नारद परतक्ष मे यदुल से नारदजू
करै प्रतिपाला॥ तातें जुगल नाम की माला॥ किशोरी अली हिय धारि रसाला॥ जन्म प्रभृतेः पूर्वं वासुदेवः स
वन निज्योंज्यों॥ सुन्यों नारकी जीव नित्योंत्यों॥ हरिकी भक्ति नंद यदो सआई॥ गति मे व कुजाप सुकरई॥ भक्ति

१०

कीकथापाइकैं॥श्रीहरिपु[illegible]वबसेजायके॥यहनरहरिपुरांणइतिहास॥नजि
नृसिंहपुराणे॥श्लो०॥यथा[illegible]ग्याहरेर्नामकीर्तयेतिस्मनारकाः॥तथातथाहरौ
पठ॥चौ०॥नरकमांहिनरअगनितअनंता॥पीडापावतजीवअचमंता॥हरिनामा
नरकनितेंउधरई॥इतिहासोत्तमबुद्धिसमकाये॥सोयहवचनरचनकरि
श्लो०॥नरकेपच्यमानानांनराणांपापकर्मणां॥मुक्तिःसंजायतेतस्मान्नामसंकी
नरनामप्रेमजुतगावै॥ईश्वरधनकोंनाममिटावै॥कर्महीनकलिमेजेप्रानी॥
होनी॥सबकर्मनिकोकाटनहारो॥नामउपायचायचितधारो॥रजतमगुणक
मसुद्धकरतातिहिकहिउँ॥कर्मबासनारहतनतेई॥नामप्रभावअमितकहिं
सुहाई॥वहुविधिवरनिभागवतगाई॥५५॥षष्टस्कंदे॥श्लो०॥नातःपरंकर्मनिबं
येयदा[illegible]कीर्तनात्॥नयत्पुनःकर्मसुसज्जतेमनोरजस्तमोभ्यांकलिलंततोन्यथा
मन[illegible]नरकोई॥हरिहरिनामउचारसोई॥अखुटलगिरतनामनरलेई।
[illegible]महादुखदाई॥[illegible]विलवतेवक्कुनजाई॥तिनहूकीआग

१ः२उपनतिःकर्मनेभ्यः बंधन

इत्रआई॥गहेरहेतहांकियो
दिवसदुखीसुजीवनिकाया॥
।रायणनामां॥सुमिरतसकां
डोअचंभोआवतयोहै॥
कडरतेंडरई॥१४॥श्लो०॥
हुतं॥१५॥चौ०॥हीनक
होई॥औरतिनहिगति
रिनामेवगतिनान्याहि
।आई॥व्याकुलचित
रिधरकेगुनगावन
०॥गोविंदनाराय
॥जगन्निवास॥१६॥

भीतपद

[illegible]नमोगलनुमेलवाकोदीनोन

११६॥ चौ०॥ परम ज्ञांन मन जांनि यहीहै॥ परम तत्व यह जांनि सहीहै॥ परम तपस्या कर्त्ती तेई॥ वासुदेव
के नाम सु लेई॥ दोहा॥ वरन्यो विष्णुरहस्य यह नाम प्रभाव अनूप॥ वासुदेव सुमिरत लहै परम मुक्ति
हरिरूप॥ विष्णुरहस्ये॥ श्लो०॥ एतद्देवपरं ज्ञानं एतद्देव परं तपः॥ एतद्देवपरं तत्वं वासुदेवस्य कीर्त्त
नं॥ ११७॥ चौ०॥ हरिको सुमिरण पातक दहई॥ तिहिको साधन चित श्रम लहई॥ मन एकाग्र होंन जब
पावे॥ तब कछु कछुक सुमिरण बनि आवे॥ नाम लेत चक्षु श्रोव हलेवो॥ ओर कछू अभ्यास न येवो॥ ता
तै नाम अधिक कहि लेखे॥ सुमिरण हूं ते कह्यो विसेखे॥ दोहा॥ वैष्णव चिंतामणि कह्यो शिव सांम हि
संवाद॥ नाम प्रभाव अपार सुनि होत हिये अह्लाद॥ ११८॥ वैष्णव चिंतामणौ शिवो सांम संवादे॥ श्लो०
अघच्छित्स्मरणं विष्णोर्वह्वायासेन जायते॥ ओष्ट स्पंदन मात्रेण कीर्त्तनं तु ततो वरं॥ ११८॥ चौ०॥ जि
हिं नर जग सत जनम निधरिकें॥ वासुदेव पूजे हित करिकें॥ ताहीके मुख में सुख साजे॥ सदा सर्वदा
नाम विराजे॥ याते सुमिरण तें अधिकाई॥ कही सबै विधि नाम वडाई॥ दोहा॥ भारत हूं मे यह लसे नारद जू
को वैंन॥ कही नाम की प्रवलता राजहि सब सुख दैंन॥ ११९॥ श्लो०॥ येन जन्म शतैः पूर्वं वासुदेवः स
मर्चितः॥ तन्मुखे हरि नामानि सदा तिष्ठंति भारत॥ ११९॥ चौ०॥ सतजुग मे व कुजग्य सु करई॥ भक्ति

२५

सहि... वे सरैई॥ कलि मैं केवल गोविंद नामां॥ सो फल देई सबै मन कामां॥ दोहा॥ विष्णुरहस्य र
हस्य यह वरनौ मधुर रसाल॥ तातें निसिदिन सुमिरिये गोविंद नाम सुमाल॥ १२०॥ विष्णुरहस्ये॥ श्लो॰
यदभ्यर्च्य हरिं भक्त्या कृते क्रतुशतैरपि॥ फलं प्राप्नोत्यविकलं कलौ गोविंदकीर्त्तनात्॥ १२०॥ चौ॰
सतजुग मैं नित ध्यान हि धरई॥ त्रेता माहि जग्य बहु करई॥ द्वापर परिचर्या करि लेई॥ सो फल कलि
हरिनाम हि देई॥ दो॰॥ द्वादस मैं बर्नन कस्यो बा स्यों जुग को हेत॥ ध्यान जग्य पूजन नि को कृष्ण नाम
फल देत॥ १२२॥ द्वादस स्कंधे॥ श्लो॰॥ कृते यद्ध्यायतो विष्णुं त्रेतायां यजतो मखैः॥ द्वापरे परिचर्यायां
कलौ तद्धरिकीर्त्तनात्॥ विष्णुपुराणे॥ ध्यायन् कृते यजन् यज्ञैस्त्रेतायां द्वापरेर्चनात्॥ यदाप्नोति
तदाप्नोति कलौ संकीर्त्य केशवं॥ १२३॥ चौ॰॥ स्याम वर्ण सुंदर अस सोहै॥ इंद्रनील मणि द्युति मन
मोहै॥ कर चरणादिक परम मनोहर॥ मोर पिछ गुंजा गल सुंदर॥ मधुर मधुर सुर मुरली बाजै॥ हरी
अंग तिन सुंदर राजै॥ श्रीदामादिक परम सनेही॥ चहुं ओर सब राजत तेही॥ ऐसे कृष्णचंद्र के नाम हि
कीर्त्तन करै सकल सुखधाम हि॥ ते ही सुद्ध बुद्धि बड भागी॥ होइ हि कृष्ण चरण अनुरागी॥ दोहा॥
एकादस स्कंध मैं बरन्यौ नाम प्रभाव॥ कृष्ण नाम निति लीजीय तजि आलस करि चाव॥ १२४॥ एकादसे
हादुरवस्था॥

हि मां कछ्र भक्ति सुख स्यात्र कथम भ्युदयो भवेत् ॥२०४॥ चौ० ॥ साधन भक्ति करत नित सोई ॥ तब ति
हृत्य कम्होई ॥ रति ही गाढ हियें जब आवै ॥ ताको नाम सु प्रेम कहावै ॥५॥ प्रेम बढै तिहि नाम स
नेहो ॥ कह्यो मान जु एह ॥ मान बढैत व प्रणय कहीजे ॥ प्रणय बढैत व राग लहीजे ॥२०६॥ राग ब
ढ्यु राग ॥ कै अनुराग लहै बड भाग ॥ बढि अनुराग भाव सरसावै ॥ भाव बढैं महाभाव कहा
वै कों नैन हां रति जांनौं ॥ तिहि तैं आगैं बकुरि बखांनौं ॥ गांडे के रस ता सुथि कांनैं ॥ सोरँके वल
तै ॥२०८॥ गुड हि थि कों नैं लेह हि जांनौं ॥ खांड थि कांनै मान बखांनौं ॥ भेर सरकरा प्रणय वि भा
. ता थि कां ऐं जां ऐं राग ॥२०९॥ मिश्री भेर कह्यो अनुराग ॥ कंद भेर भाव हि रसपाग ॥ महाभाव
रोला की भेरा ॥ इहि तैं अधिक कछू न हि औरा ॥२१०॥ ए जु भक्ति रस स्थाई कहिये ॥ अमृत समान स्वाद
कुन हिये ॥ जसें दधि मिश्री घुटयावै ॥ घृत मधु मरिच कपूर मिलावै ॥२११॥ कहिये नाम रसाला सो
कि तु आस्वाद न होई ॥ तसें भक्ति भेद रति जांनैं ॥ ताके पंच प्रकार बषांनैं ॥२१२॥ भक्ति सो
रै हरि सों वै ॥ द्वितिय दास्य रति अति मन भावै ॥ तृतिये सख्य रति मधि मां बरनी ॥ वत्सल रति
चिरजस

सहि... दे
हस्य यह वरन ॥२९३॥ पंचम मधुर मधुर रति कहिये ॥ मुख्य भक्ति मे एरस लहिये ॥ अद्भुत हा
स्य सर्चणा मये ॥ रौद्र विभत्स ओर वरन्यों भये ॥२९४॥ ए सातों रस गौंण कहे हैं ॥ रसिकन
तिन एनग हे हैं ॥ कहे पंच रस मुख्य थ्यापिके ॥ भक्त नके मन रहे व्यापिके ॥२९५॥ सातों रस
अांवें जोई ॥ आगंतुक तातें दरसाई ॥ सांत भक्त सनकादिक लहिये ॥२९६॥ दास भक्त जग मां
फरा ॥ हरि पद सरनौं जां न्यों सारा ॥२९७॥ सख्य भाव व्रज श्रीदामा दिक ॥ पुर में अर्जुन सखा
कलोः ॥ वत्सल भक्त नंद व्रज जसुमति ॥ पुत्र भाव दृढ हृत मां हिरति ॥२९८॥ पुर में सोरि देवकी ग
न दार्ष नई सुरता मैं सनें ॥ मधुर भक्त रस व्रज में गोपी ॥ पन करि श्रे मधुजा दृढ रोपी ॥२९९॥ पुर में महि
मो है ॥ कमी ॥ ह वैकुंठ रमां पद दासी ॥ फेरि कह्यौ रति दोय प्रकारा ॥ तिहि कौ वरनौं अब विचारा ॥
श्रृंगार तेज सुंदर र्यै मधुर रस जोई ॥ इति य केवला वरनी सोई ॥ व्रज मकेवला सुद्ध प्रकासे ॥ ऐश्वर्य
की र्तन करैं सासे ॥३००॥ मथुरा तथा द्वारिका मांही ॥ मिश्रत भाव प्रकासत तांही ॥ वैकुंठ मे
एकादस स्कंध

हिमांकह्लीः श्यार॥नाममहिमवनिधिश्रासतेंकरनहारउद्धर॥१३७॥ब्रह्मवैवर्त्ते॥श्लो०॥यदनुध्यानदावाग्नि
दग्धकर्मेंतरणःपुमान्॥विशुद्धंपश्यतिब्रह्मवित्त्कमपिकेशवं॥१॥तदस्यनामजीवस्यपतितस्यनवोत्तु
धृ॥हस्तावलंवदानायप्रवीणोनायरोहरिः॥१३७॥चौ०॥परमसुखहिजोपायोचाहै॥सोहरिहरिकहिहि
यतमाहै॥हरिकोनामध्येयनितहीहै॥गांनकीरतनजोगियहीहै॥दोहा॥यहजावालिसुसंहिताकह्यो
नामहितभाव॥नामनरायणादिवकोभवसागरकीनाव॥१३८॥जावालसंहितायां॥श्लोक॥हरेर्नामकाध
येयंध्येयंगेयंनिरंतरं॥कीर्त्तनीयंचवहुधानिर्वृतिंवहुधेछता॥१३८॥चौ०॥जाकेनामश्रवणधुनिसोना
महापातकीहूतउद्धरई॥तिननामनिकीमहिमांजेसें॥तुच्छवुद्धिमैंवरनौंकसें॥दोहा॥वृहदनार
सुजसनारदवरननकीन॥मैकिहिविधिवर्ननकरौंमंदमलिनमतिहीन॥१३९॥वृहदनारदीयेश्रीनार
को॥श्लो०॥यन्नामश्रवणेनापिमहापातकिनोऽपिये॥पावनत्वंप्रपद्यंतेकथंतोष्पामिक्षुद्रधीः॥१३९॥चौ०॥
किन्तुत्रसंगसुनेहरिनामां॥कीर्त्तनकरैकहूंश्रविरामां॥पातकसवैभस्मतौहोई॥नक्तिसहितसुमि
रैहरिसोई॥तौताकीकिमिकरियवडाई॥श्रचिरजजुक्तनामहरिराई॥दोहा॥इतिहासोत्तममैंकह्योश्र
चिरजरूपप्रभाव॥कृष्णनामकलिमलहरनमंगलकरनसुभाव॥१४०॥इतिहासोत्तमे॥श्लो०॥श्चतनमशेषाणां

तंवापिहरेराश्र्यैकर्मणः॥ ददत्येनोसिसवीणिप्रसंगात्किमुतन्किर्तितः॥१४०॥ चौ०॥ हेहरिगु-
रसनमांही॥ यहकछुवातअनतीनांही॥ दरसनकरततिहारोकोई॥ पापहरैजननिर्मलहोई॥ नामति
हारोमंगलमाला॥ एककुवेरसुनैंचांडाला॥ संसारतैंमुक्तसोहोई॥ नामप्रभावविदितजगसोई॥ दोहा॥
महिमांश्रीभागोतमैंषष्टसकंधवखांन॥ चित्रकेतयहवीनतीप्रभुसौंकरीसुजांन॥१४१॥ षष्टस्कंधेचित्र
केतूक्तौ॥ श्लो०॥ नहिभगवन्नघटितमिदंत्वद्दर्शनान्नृणामखिलपापक्षयः॥ यन्नामसकृत्श्रवणात् मा
पुक्कसोऽपिविमुच्यतेसांसारात्॥१४२॥ चौ०॥ श्रीप्रभुजूकेनामजितेका॥ महिमांअधिकएकतैंएका॥ खो
तामणिसमनामउचारा॥ तहांपरंतुजोकरियविचारा॥ कोईनामकीअधिकसांमर्थ्या॥ ताकोअव- कोग
कैअर्थ्या॥ जसैअवतारनिमधिजोई॥ अंसकलाअवतारहैकोई॥ कोउविभूतिअवतारवखांनै॥ क
वतारइकजांनै॥ कोऊजुगावतारकहैहै॥ मनुमनुप्रतिअवतारलहैहै॥ कोउमहावतारसुहाये॥ कृष्णस्व
यंभगवांनहिगाये॥ अधिकप्रभावकृष्णहीमांही॥ ईश्वरतालीलादरसांही॥ कृष्णसकलमाधुर्जेनिधांनां॥
अवतारीकृष्णकृष्णप्रमानां॥ सवनामनिमधिनामसुहायो॥ कृष्णनामअवतारीगायो॥ कृष्णनाममधिअधि
कप्रभावा॥ सकलपुराणनिमधिमुनिगावा॥ वेशंपायनसहसनामवर॥ तीनयागतिहिकेजुकरैनर॥ जो

कछु तातैं फल दरसावै ॥ कृष्न कहत ही सो फल पावै ॥ दोहा ॥ यह ब्रह्मांडपुरांण मैं महिमा सुख की धांम ॥
सहस नाम त्रय सम कह्यो एक कृष्न को नाम ॥ १४२ ॥ ब्रह्मांडपुरांणे ॥ श्लो० ॥ सहस्र नाम्नां पुण्यानां त्रिरावृत्या
तु यत्फलं ॥ एकावृत्या तु कृष्नस्य नामैकं तत् प्रयच्छति ॥ १४२ ॥ चौ० ॥ कृष्न नाम अर्जुन नैं लीनौं ॥ प्रांण समान
मित्र निज कीनौं ॥ नाम प्रभाव जीति त्रिपुरारी ॥ अस्त्र पाशुपत पायो भारी ॥ जातैं कृष्न नाम महो गायो ॥ कृष्न समा
न सारथी पायो ॥ नाम प्रभाव अमित अति सोहै ॥ सुनत हि सकल विश्व मन मोहै ॥ दोहा ॥ यह ब्रह्मांड का [illegible]
मैं महिमै लिखी नवीन ॥ नाम जपत अर्जुन सखा कृष्न सारथी कीन ॥ १४३ ॥ श्लो० ॥ इदं किरीटी संजप्य नाम्ना
पाशुपतास्त्रमाप्य ॥ कृष्नस्य प्राणभूतःसन् कृष्नं सारथिमर्थवान् ॥ १४३ ॥ चौ० ॥ यातैं अधिक कहा [illegible]
कहिये ॥ कृष्न कहत परमानंद लहिये ॥ ब्रह्मानंद स्वाद सरसावै ॥ कृष्न कहत नर सायुज पावै ॥ दोहा ॥ [illegible]
ह ब्रह्मांडपुरांण पुनि महिमा लिखी बखांनि ॥ अधिक कौ ब्रह्मानंद तैं कृष्न नाम सुखदांनि ॥ १४४ ॥ ब्रह्मांडे ॥
श्लो० ॥ किमिदं बहुना संशान्मानुषानंदनिर्भरः ॥ ब्रह्मानंदमवाप्नोति कृष्नसायुज्यमाप्नुयात् ॥ १४४ ॥ चौ० ॥
अति रहस्य मम नाम जितेका ॥ ब्रज मैं कैहैं प्रगट तितेका ॥ पुनि पवीत्र परम रुचिकारी ॥ नव वंधन कार
न अघहारी ॥ धरणी सौं यह वचन सुहायो ॥ श्रीवाराह देव मन भायो ॥ दो० ॥ श्रीवाराहपुराण मैं वर्द्धंतम शेषाणां

10

७२० सार॥ नवेवेधनहु टेतो चहै करो नामउचारै॥१४४॥वाराहपुराणेप्रनुवाक्यं॥श्लो०॥तत्रगुह्यानिना...
नविद्यंति मम प्रिये॥पुण्यानि चपवित्राणि संसारछेदनानिच॥१४५॥चौ०॥नईसप्तपीढीहूतिनकौं॥छे
हैचोदहपीढीविनकों॥कलिजुगमेसोईनरतारै॥करिकीरंतनकृष्णउचारै॥दोहा॥द्वारावतीप्रभाव
मैनाममाहात्तमगाइ॥हितकरिकैंप्रहलादजू वलिदिकह्योसमझाइ॥१४६॥द्वारिकामहात्म्येप्रह्ला
दवलिसंवादे॥श्लो०॥अतीताःपुरुषाःसप्तभविष्याश्चचतुर्दश॥नरस्तारयतेसर्वान्कलौह
तिकीर्त्तनात्॥१४६॥चौ०॥सोवतजागतचलतहूप्रांनी॥कृष्णकृष्णमुखवोलैवांनी॥कलिमैन
रायणजोई॥कृष्णरूपनिहचैंवहसोई॥दोहा॥यहवचनप्रहलादजूवलिप्रतिकह्योरसाल॥ग
ल्पकीरतनसारसुतघोरइहीकलिकाल॥१४७॥श्लो०॥कृष्णकृष्णेतिकृष्णेतिस्वपन्जाग्रद्व्रजंस्तथा॥या
उत्यतिकलौनित्यंकृष्णरूपीनवेद्विसः॥१४७॥चौ०॥जोकोउविप्रजांनिकैंमारै॥सुरापांनहूकरत
नहारै॥कृष्णकृष्णनिसिदिनउच्चारै॥होइपुनीतसकलअघजारै॥दोहा॥व्रह्मवैव्रतकनामकी
महिमांकहतविचित्र॥महासुरापीविप्रहाहरिजजेहोहिपवित्र॥१४८॥व्रह्मवैवर्ते॥श्लो०॥हननव्रा
ह्मणमत्यंतंकामतोवासुरांपिवन्॥कृष्णकृष्णेत्यहोरात्रंसंकीर्त्यशुचितामियात्॥१४८॥चौ०॥कार

30
10

कृष्ण नाम उच्चरति मंगल राजै ॥ जाके मुख मैं सदा विराजै ॥ महापाप कोटिन कों जारै ॥ विष्णुधर्म यह वचन उचारै ॥ कहेक
विष्णुधर्मे ॥ श्लो॰ ॥ कृष्णेति मंगलं नाम यस्य वाचि प्रवर्त्तते ॥ भस्मीभवंति राजेंद्र महापातककोटयः ॥ १४९ ॥ चौ॰ ॥
कृष्ण कृष्ण पुनि कृष्ण उचरई ॥ मोहि सुमिरण करि नित हिय धरई ॥ करौं उधारन नर्क तें ऐसें ॥ जल कों भेदि कमल
होइ जैसे ॥ दोहा ॥ यह देव नरसिंघ पुरांन तें वचन कियो उच्चार ॥ कृष्णचंद्र निज नाम की महिमा कही अपार ॥ १५० ॥
नारसिंहे भगवदुक्तो ॥ श्लो॰ ॥ कृष्ण कृष्णेति कृष्णेति यो मां स्मरति नित्यशः ॥ जलं भित्त्वा यथा पद्मं नरकाद्
उद्धराम्यहं ॥ १५० ॥ चौ॰ ॥ नर भव व्याल डस्यो जो होई ॥ पर्यो मूर्छित सुधि नहि कोई ॥ औषधि ताहि न भो ना
त करी है ॥ कृष्ण नाम विषहरन जरी है ॥ जैसे गरुड देखि अहि भागै ॥ त्यों भव अघ हितें छूटि सु जागै ॥ देव
डस्यो जाहि भव व्याल तिहि औषधि यही सु सार ॥ गरुडपुरांन बतावही नाम अमृत की धार ॥ १५१ ॥ गारुडे ॥
श्लो॰ ॥ संसारसर्पसंदष्टनष्टचेष्टैकभेषजं ॥ कृष्णेति वैष्णवं मंत्रं श्रुत्वा मुक्तो भवेन्नरः ॥ १५१ ॥ चौ॰ ॥ नामन मां
हि सुखै यह नाम ॥ कृष्ण नाम सब सुख को धाम ॥ सब पापन कों हरन सुहायो ॥ कृष्णचंद्र निज वचन ब
तायो ॥ दो॰ ॥ वचन प्रभास हि खंड मैं निज मुख कह्यो गुपाल ॥ सुनि नारद सब नाम तें मेरो नाम रसाल ॥
१५२ ॥ प्रभासखंड पुराणे श्री भगवद्वाक्यं ॥ श्लो॰ ॥ नाम्नां मुख्यतरं नाम कृष्णाख्यं मे परंतप ॥ प्रायश्चित्तमशेषाणां

नी०　　१५२ चौ०

३१ पापानो मोचकं परं ॥ काहू गैर रह्यो किनि कोई ॥ कृष्णकीरतन करै जु सोई ॥ सब पापन कौं कर विनासा ॥ पर
मधाम मैं पावै वासा ॥ दोहा ॥ नारद तप अरु पुराण यह जानत है सब सार ॥ जो चाहत भव तरन तौ सुमिरो
नंदकुमार ॥ १५३ ॥ पाद्मे ॥ श्लो० ॥ यत्र तत्र स्थितो वापि कृष्ण कृष्णेति कीर्तयेत् ॥ सर्वपाप विशुद्धात्मा स ग
च्छेत्परमां गतिं ॥ १५३ ॥ चौ० ॥ गोपीजनवल्लभ वनवारी ॥ भ्रतो मैं निहचै यह धारी ॥ कर्म रु ग्यान जोग व
कु तेरे ॥ भक्ति मारग श्रवणादिक केरे ॥ इन लें सरैं नाहि कछु मेरै ॥ आयो सरण नाम एक तेरै ॥ कृष्ण
नित हो वृति राजो ॥ मम जिह्वा के अग्र विराजो ॥ जब ही कृष्ण नाम मुख जागे ॥ ताहि छिन सब भ
नागे ॥ दोहा ॥ कृष्ण नाम महिमा सरस विष्णुधर्म कहि देत ॥ जो भव भय चाहेत स्यो भजिद रिहोइस
१५४ ॥ विष्णुधर्मोत्तरे श्रीकृष्णसहस्रनामस्तोत्रे ॥ श्लो० ॥ वह्नवी कांत किं तैस्तैरुपायैः कृष्ण नामतः ॥ धा
तु जिह्वाग्र संजातं रुद्रे हि महाभयं ॥ १५४ ॥ चौ ॥ हे शिव तुम सौं सांची भाखौं ॥ किहि विधि अब हि
पायकें राखौं ॥ नीकें गुपत राखियो यह निधि ॥ मेरो कृष्ण नाम ही सब सिधि ॥ मृतिसजीवनि विद्या ना
मा ॥ कृष्णनाम जपि आव कु जामा ॥ मृत्युंजय यह नाम कहावो ॥ कृष्ण नाम तुम नीकें गावो ॥ दो० ॥ श्री
विष्णुधर्म वक्तुस्यो कहत नाम प्रभाव बखांन ॥ मृत्युसजीवनि मंत्र नित तु सिमरकु से ज्ञ चा० ॥ [illegible]

१५५॥ विष्णुधर्मे॥ श्लो०॥ सत्यं ब्रवीमि ते राजन् गोपनीयमिदं मम॥ मृत्युसंजीवनी नाम कृष्णाख्यं हृदेक
धारय॥१५५॥ चौ०॥ अंतकाल के समय मा निडर॥ कृष्ण कृष्ण कृष्ण हि उचरै नर॥ ऐसी विधि जो तजै स
रीरा॥ कृष्ण महातम सुनि मतिधीरा॥ आदि अंक कइक मुक्ति हि देई॥ और वचै सो उ विधि सुनि लेई॥ वचे
अंकुलजे तिन्हके जाही॥ वसे रिणी होइ तिहि सुख मांही॥ आप हि तैं निकसें नित तेही॥ भारत वि नाग क
है विधि एही॥ दोहा॥ भारत विनाग वखांन ही गुन म हि मांइ हिं नाति॥ पावे न ताक्ष नु नाम की कापैधु
रनी जाति॥१५६॥ भारत विनागे॥ श्लो०॥ कृष्णः कृष्णं कृष्ण इत्यंतकाले जल्पन् जंतुर्जीवितं यो जहाना
॥ आद्यः शाद्धः कल्पते तस्य मुक्तौ ब्रीडानम्रो तिष्ठते त्यावृणस्थो॥ १५६॥ चौ०॥ कृष्ण नाम चिंतामणि रू
पा॥ सो चैतन्य स्वरूप अनूपा॥ पूरण शुद्ध आनंद धाम है॥ जस नामी तस कृष्ण नाम है॥ नामी नाम दुहु
नि के मांही॥ एक रूप अंतर कछु नांही॥ दोहा॥ नामी नाम दुहुनि मैं अंतर कछु न विचारि॥ ता तें कृ
ष्ण सु नाम तिहि हिय रसना इहु धारि॥१५७॥ श्लो०॥ नाम चिंतामणिः कृष्णश्चैतन्यरसविग्रहः॥ पूर्णः
शुद्धो नित्यमुक्तोऽभिन्नत्वान्नामनामिनोः॥१५७॥ चौ०॥ भव सागर की दह दल मांही॥ फसे कीच
कें वीच तहां ही॥ तिनहि उधारन नाम समर्थो॥ कृष्ण कहत तहीं सरें सु अर्थो॥ सुनत कृष्ण को नाम उ

ना०
३२

चारा॥प्रेमानंदसजलदृगधारा॥व्है रोमांचहियो नहिं द्रवै॥कृष्णसुनतजसनेहजनावै॥तिनरसि
कनिपदपाडकतामें॥मेरीवारंवारप्रणामैं॥दो०॥कृष्णनामकोंसुनतही व्है जिनकैंजसप्रेम॥ति
नपरडारोंवारिकैंकोटिजग्यव्रतनेम॥१५८॥श्लो०॥तेभ्योनमोस्तुनववारिधिजीर्णपंकसंमग्नमो
हणविचक्षणपादुकेभ्यः॥कृष्णेतिवर्णयुगलश्रवणेनयेषामानंदथुर्भवतिनर्त्तितरोमवृंदः॥१५८॥
दोहा॥जेहरिगुणगावतनहीं नरसरीरजसपाय॥तिनकीनिंदाकरतजवनारदमुनिसमुझाय॥
चौ०॥जेनररसनापायवखीना॥हरिकेनामउचारनकीना॥कहनजोग्यनितगुणगणजासू॥
रैनजोमुखनामप्रकासू॥महामंदडुरमतिसोईजानूं॥जिनिहरिनामनकियउवखांनूं॥तहि
वगनिसेनीमूढा॥वेचितमतिनहिहोतजरूढा॥१५९॥श्रीनारदवाक्यं॥श्लो०॥जिव्हांलब्ध्वापि
योविष्णुंकीर्तनीयंनकीर्तयेत्॥लब्ध्वापिमोक्षनिःश्रेणींसनारोहतिदुर्मतिः॥१५९॥चौ०॥कृष्णनामले
जिह्निछिनमांही॥जिनको हियोद्रवैकछुनांही॥सजलनैननकछुंहोंइनजाकैं॥तनरोमांचपुलकनहि
ताकैं॥ताकोहियोसुन्यजडजांनौं॥वज्रसमांनकठोरवखांनौं॥दोहा॥वरनीडुतिसकंधमैंनामप्रेमकी
रीति॥कहीसूतजूसौंयहेसौंनकवरनिविनीति॥१६०॥द्वितीयस्कंधेसूतंप्रतिशौनकवाक्यं॥चौ०॥कृष्ण

३०
१०

तदश्मसारंहृदयंबतेदंयद्गृह्यमाणैर्हरिनामधेयैः॥नविक्रियेताथयदाविकारोनेत्रेजलंगात्ररुहेषु
चौ॰ हर्षः॥१६०॥हरिनामकीरतनकरिकैं॥कैरोमांचनद्रगजलभरिकैं॥ताकोहियोवज्रसमगायो॥इतिहा
सोत्तमवरनिसुनायो॥१६१॥इतिहासोत्तमे॥श्लो०॥नाम्निसंकीर्तितेविह्वलोयस्यपुंसोनजायते॥सरोमपुल
कंगात्रंसतत्वेत्कुलिशोपमः॥१६१॥चौ०॥नामकीरतनजोनरकरई॥ताकोसुनिवक्तवविस्तरई॥इहिपु
न्यकीनसंचयकीनी॥तातेंदेहरोगग्रसिलीनी॥रोगग्रसितसततजन्मनिरहई॥कात्यायनसंहितामधि
हई॥१६२॥कात्यायनसंहितायां॥श्लो०॥नामसंकीर्तनाज्जातंपुण्यंनोपचयंतिये॥नानाव्याधिसमोना
क्ताःशतजन्मसुतेनराः॥१६२॥चौ०॥वहईवडीहानिजियकेरी॥वहईवडीमोहकीबेरी॥वहईदेवन
विघ्नजिहिकेरै॥वहईभ्रमतरक्यौउरकेरै॥जिहिहिएजिहिमक्ततीयदनरही॥वासुदेवकीशरननहि
करई॥दोहा॥यहकात्यायनसंहितासवसौंकहीसुनाय॥हरिकीर्तनविनुनरनकोजन्मवृथाहीजा
य॥१६२॥कात्यायनसंहितायां॥श्लो०॥साहानिस्तन्महच्छिद्रंसमोहःसचविभ्रमः॥यन्मुहूर्तंक्षणं
वापिवासुदेवंनकीर्तयेत्॥१६३॥चौ०॥नामकीर्त्तनहिजेअपमानैं॥सुनिहूकेंजेनिंदाठांनै॥वदैपति
ततहांतेंनठिजाई॥ताहिकीर्तननांहिसुहाई॥इहिपापनैंनर्कनितिहिहोई॥घोरजाततनांपावसोई॥दो०॥

महामूढ जे करत हैं हरि कीर्तन अपमान॥ ते नर परही नर्क में यों कह्य पद्मपुरान॥१६४॥ पाद्मे॥ श्लो०॥
अवमन्यच ययांति ते भगवन्नकीर्तनं नराः॥ ते यांति नरकं घोरं तेन पापेन कर्मणा॥१६४॥ चौ०॥ कूकर सूकर करत बड़ाई॥ यह न रहम रौ जे बोनाई॥ गर्धभ उष्टु सराहें ताकों॥ कृष्ण नाम प्रिय लगत न जाकों॥ कृष्ण नाम धुनि एक कुवारा॥ परी न श्रवन निसुख अगारा॥ नयो निरादर भाजन तारी॥ याते कह्यो स्वान नि रधारी॥ विसय मांझ अतिसय लवलीनों॥ विट वराह एहि तें कहि दीनो॥ कंटक सम विखयादि कुवेट खाय ऊंट सम सकल समूहा॥ वहे ना रग हको वकु नो ती॥ याते खर सम भयो कुजाती॥ नर पशु हि जग में तेही॥ वृथा धरी तिन ह्यीन र देही॥ दोहा॥ अधिकारी हरि नाम को नरतन पाय अनूप॥ तताहि अति मंद मति पशु तें अधम कुरूप॥ नरम्मोड़ तिय स्कंध में सौनक परम सुजांन॥ कृष्ण नाम को न हि सुन तेन र पशू समान॥१६५॥ द्वितीय शौनक वाक्यं॥ श्लो०॥ श्वविड्वराहोष्ट्र खरैः संस्तुतः पुरुषः पशुः॥ न यत्कर्णपथोपेतो जातु नामगदाग्रजः॥१६५॥ कृष्ण नाम ही सदा गाईये॥ कृष्ण मनोहर रूप ध्याईये॥ सदा नाम कीर्तन करि लीजे॥ सर्वोपरि गति नाम लहीजे॥ दोहा॥ शिवपुराण में यह वचन शिव ब्रह्मी कह्यो अनूप॥ सुनकु सुधर्मा कृष्ण को नाम हि मंगल रूप॥१६६॥ शिवपुराणे॥ सुधर्माण प्रति शिव०॥ का०

३०
१०

श्लो०॥ कृष्णनामसदागेयंध्येयंरूपंसदाहरेः॥ कीर्त्तनीयंसदानाम नामैवपरमागतिः॥ २६६॥ चौ०॥ सबउरेक
नकोंहितमैंनाखों॥ कृष्णनामहीनितअभिलाखों॥ कृष्णनामपरनरहैजेई॥ तिनकोंकलिबाधानहिदेई॥
दोहा॥ वृहदनारदीमेंकह्योनारदजूउच्चार॥ सबसाधनतैंहैसिरैकृष्णनामरससार॥ २६७॥ वृहन्नारदीयेश्री
नारदवाक्यं॥ श्लो०॥ तस्मात्समस्तलोकानांहितमेवमयोच्यते॥ कृष्णनामपरान्मर्त्यान्नकलिर्बाधतेक्वचित्
॥ २६७॥ बडभागीसुकृतीनरसोई॥ जमभटभयतिनकोंनहिहोई॥ रौरवनरकनितेंक्योंडरई॥ प्रेतराजतिनि
सनकरई॥ जमदंडकोंकछुनभयवाकों॥ कालहुकोंकछुभयनहिताकों॥ पापनहूंकोंभयनहितेनाना
कलिमेंकृष्णनामजोलेई॥ एतेभयतिन्हिकोंनहिव्यापे॥ जेनरकरहिकृष्णकेजापे॥ दोहा॥ कृष्णना[illegible]
वरनिभाषेवन्हिपुरान॥ उपदेस्योप्रहलादकोंश्रीमुखकृष्णप्रमान॥ २६८॥ अग्निपुराणेप्रह्लादंप्रतिश्री
कृष्णवाक्यं॥ ननयंयमदूतानांनभयंरौरवादिकात्॥ नभयंप्रेतराजस्यगोविंदेतिचजल्पतां॥ १॥ नभयंय
मदंडस्यनचकालसमुद्भवं॥ नभयंपातकानांचकलौकृष्णेतिजल्पतां॥ २६८॥ चौ०॥ कपिलागऊकोटिदे
दांनां॥ अश्रुतजग्यकरिरचैंविधांनां॥ कंन्यादांनकरैइतनेई॥ औरकछुपुन्यकरैकितनेई॥ इनपुन्यनितैंजो
फलहोई॥ लहैकृष्णकीरतनतैंसोई॥ दोहा॥ कूर्मपुराणविवेकहैपुन्यविधानअनेक॥ सबतेंअधिकोजा

ना०
३४ नियेंकृष्णकीरतैएक॥१६८॥कोर्मे॥श्लो०॥कपिलाकोटिदानस्यकन्यानामयुतस्य च॥यत्फलंलभते
जन्तुस्तत्फलंकृष्णकीर्त्तनात्॥१६९॥परमपातकीतेउजगमांही॥वैरभावकरिकृष्णकदांही॥कृष्णकहे
निंदाकरिजेऊ॥पातकघोरमुद्धहोंहतेऊ॥चैद्यसुयोधनअघीअघाई॥निंदकनामलेतगतिपाई॥पर
मभागवतकृष्णउचरही॥भावप्रीतिहियमेंदृढधरही॥कृष्णधामजनयावहोई॥यामेंकहाअचंभो
होई॥दोहा॥वरन्योलघुभागोतमेंनामप्रभावअनंत॥सवहीसुनायोव्यासजूजनकुप्रीतिकरिवंत
१७०॥लघुभागवतेव्यासवाक्यं॥श्लो०॥येपापिनोपिशिशुपालसुयोधनाद्यावैरानुवधमनसु
वेवदंतः॥मुक्तिंगताःसपदितेनविधूतपापाःकःसंशयःपरमभागवतोत्तमानां॥१७०॥चौ०॥वैत
नएकांतसघनमें॥जोगअष्टांगहिसाधेतनमें॥निर्भयद्विजतेमुक्तिपावो॥कैनिसंकसुरलोकहिग
जावो॥हमकोंतोवृंदावनमांही॥घनकदंवकुंजनकीछांही॥विहरतरसिककिशोरकिशोरी॥स्यां
मगोरसुंदरवरजोरी॥तिनकेनामप्रीतिकरिगाऊं॥लाखनिजनमेंतहांकिनपाऊं॥दोहा॥पद्मावलि
वर्नेनकह्योस्यांमनामसुखसार॥प्रेममगनतिहिगाएहोंगहिकदंमकीडार॥१७१॥पद्मावल्यो॥श्लो०॥
योगश्रुत्युपपत्तिनिर्जनवनध्यानाध्वसंभावितस्वाराज्यंप्रतिपद्यनिर्भयममीमुक्ताभवंतुद्विजाः॥कदं

३०
१०

असमाकेतुकदंवकुंजकुहरत्रोन्मीलदीदीवरश्रीमशपामलनामधामजुषतांजन्मास्तुलद्यावधि॥१७१॥टेक
कृष्णनाममहिमांजसलहियै॥याऊपरांतओरकहाकहियै॥कृष्णनामचाहैजुउरई॥यहअभिलाखमात्रज
वकरई॥तबहीतुरंतदुरितसवकांपै॥महामोहकोंआवतझांपैं॥चित्रगुप्तमनसंकाआनी॥लेखनधरनल
ग्योनयमांनी॥विधिकुताकेहूजनकाजैं॥मधुपर्कोहिककसोंजनिसाजैं॥कृष्णनामअवयहजनलहै॥परमधो
मवैकुंठहिजहै॥तातेंयाकोदरसनकरिकैं॥होहिपुनीतहमअंमुदभरिकैं॥नाममहातमकीअधिकांई
१७२॥पद्यावल्यां॥श्लो०॥वेपंतेदुरितानिमोहमहिमासंमोहमालंबतेसातकंमखिरंजांनीकलमतेनोना
त्रगुप्तः कृती॥सानंदंमधुपर्कसंभृतिविधौवेधाःकरोत्युद्यमंवक्तुंनाम्नितवेश्वराभिलषितेब्रू[illegible]
मन्यत्परं॥१७२॥चौ०॥श्रीमतकृष्णनामकीरतन॥नवदावानलकोमानोंघन॥चितदर्पनकोंनिमल
कारी॥मंगलकुमुदनिनिसाउज्यारी॥विद्यारूपकुलवधूजोहै॥नामहीताकीजीवनिसोहै॥आनं
दरूपीउदधिवढावै॥नामहिचंद्ररूपदरसावै॥मधुरअमीतेंपरममनोहर॥स्नानतुल्यजीवनकोंसु
चिकर॥१७३॥पद्यावल्यां॥श्लो०॥चेतोदर्पणमार्जनंभवमहादावाग्निनिर्वापणंश्रेयःकैरवचंद्रिकावि
वरणंविद्यावधूजीवनं॥आनंदांबुधिवर्द्धनंप्रतिपदंपूर्णामृतास्वादनंसर्वात्मस्नपनंपरंविजयतेश्री

ना०
३५

कृष्ण संकीर्त्तनं ॥१७३॥ चौ० ॥ कोटि कोटि ब्रह्मांड विराजैं ॥ तहां जहां जो ईश्वरता सजैं ॥ सो सब कृष्ण नाम के
मांही ॥ सदा रहत कछु संसय नांही ॥ कृष्ण नाम चैतन्य स्वरूपा ॥ सब बिधि सुंदर परम अनूपा ॥ ताको एक अंश
सस सब गाई ॥ व्यापि रह्यो है जहां तहां ही ॥ अगतेन को गति देन यही है ॥ नाम रूप अवतार सही है ॥ साधन
यही यही फल मेरे ॥ जीव नियही सरण इहि केरे ॥१७४॥ पद्यावल्यां ॥ श्लो० ॥ ब्रह्मांडानां कोटिसंख्याधिका
नामैश्वर्य्यं यच्चेतनावायदंश : ॥ आविर्भूतं तन्महः कृष्णनाम तन्मे साध्यं साधनं जीवनं च ॥१७४॥ छंद ...पी
रामचंद्र जनार्दन श्री जगतपति नारायना ॥ आनंद मूरति दयापर कमलालया पति र्पवना ॥ श्री
मा मृत्तस रित्पति उ ठत तरल तरंग मैं ॥ मोहि मग्न की जे बार बार हि नाथ प्रेम अभ्रंग मैं ॥१७५॥ श्लो० ॥ रा
मे ति जनार्द्दने ति जगतां नाथे ति नारायणे त्यानंदे ति दयापरे ति कमला कांते ति कृष्णे ति च ॥ श्रीमन्नाम
महामृताब्धि लहरी कल्लोल मग्नं मुहुर्मुह्यंतं गलदश्रु नेत्रमवशं मां नाथ नित्यं कुरु ॥१७५॥ चौ० ॥ श्रीरा
धा बरकांत छबीले ॥ करुणामय श्री कृष्ण रसीले ॥ प्राणन के वल्लभ न तुम स्वांमी ॥ हे मुकुंद मुर अंतक ना
मी ॥ यह नामावलि विमल उदारी ॥ मुक्त मान छबि इहि पर वारी ॥ नित ही कंठ मांहि यह धारो ॥ इहि
प्रताप तें कृष्ण निवारो ॥ लक्ष्मीधरणां ॥ श्लो० ॥ श्रीकांत कृष्ण करुणामय कंजनाभ कैवल्य वल्लभ मु...
१७६

३०
१०

सुरांतके ति॥ नामावलीविमलमोक्तिकहारलक्ष्मीलावण्यएवंचनकरीकरवाणिकंठे॥१७६॥ चौ०॥ हे हल
लोहेराममुकुंदावामनवासुदेवसुखकंदा॥ जगतगुरूमच्छकच्छसुखदाई॥ नारसिंहवाराहसुहाई॥
पालनकरियेराघवमोरा॥ मैसरणगतजनहौंतोरा॥ देवदनुजजगमांहिजितेका॥ वंदततवपदकंजतितेका॥ नारदादिजेसकलमुनीसा॥ देहतवपदनावतसीसा॥ दयानिधानदेवकीनंदन॥ जनदुखमोचनकंसनिकंदन॥ यहविनतीमेरीसुनिलीजे॥ अचलभक्तिचरणनकीदीजे॥१७७॥ श्लो०॥ हलराममुकुंदवामन वासुदेवजगद्गुरोमच्छकच्छपनारसिंहवराहराघवपाहिमां॥ देवदानवनारदादिमुनीद्रवंद्यरनोना(?) थदेवकीसुतदेहिमेतवपादभक्तिमचंचला॥१७७॥ चौ०॥ हे गोपालकपरमकृपाला॥ हे लक्ष्मीपतिदीन दयाला॥ हे गजेंद्रपरकरुणाकारी॥ हे माधवभक्तनदुखहारी॥ हे वलदेवानुजनंदनंदन॥ तीनलोकके गुरुजगवंदन॥ पंकजाक्षगोपीजनप्रानं॥ पालकुत्तमविनगतिनदिआनं(?)॥१७८॥ श्लो०॥ हे गोपालक हे कृपाजलनिधेहेसिंधुकन्यापतेहेकंसांतकहेगजेंद्रकरुणापारीणहेमाधव॥ हेरामानुजहेजगत्रयगुरोहेपुंडरीकाक्षमांहेगोपीजननाथपालयपरंजानामिनत्वांविना॥१७८॥ चौ०॥ श्रीनारायणपंकज लोचन॥ रामसीयापतिभवभयमोचन॥ अच्युतनंदनंदनगोविंदा॥ दामोदरआनंदमुकुंदा॥ राघव

ना०
३६

विष्णुअखिलअघगंजन॥ वासुदेवनरहरिजनरंजन॥ देवइंद्रचूडामणिनामूक॥ भवसागरतारकसु
खदायक॥ हृदहरिकृष्णतुमहिसिरनांऊं॥ श्रीवनवासवेगिअवपाऊं॥ १७८॥ श्लो०॥ श्रीनारायणपुंडरीक
नयनश्रीरामसीतापतिगोविंदाच्युतनं दनंदनमुकुंदानंददामोदर॥ विष्णोराघववासुदेवनृहरेदेवें
द्रचूडामणेसंसारार्णवकर्णधारकहरेश्रीकृष्णतुभ्यंनमः॥ १७९॥ चौ०॥ कृष्णनामसवपातकहरई॥
सुकृतउदयप्राणिनकेकरई॥ ब्रह्मलोकतैंअरुचिकरावै॥ गुरुपदमांहिनभक्तिसरसावै॥ भगवद्‌ . . व
ज्ञानकौंदेई॥ भ्रांतिअविद्याकौंहरिलेई॥ तमकुज्ञानवीजकौंजारै॥ जन्ममरनजीवनिकेटारै॥ . .
आनंदमांहिछकावै॥ कृष्णहिखैंचिदृगनिदरसावै॥ १८०॥ पद्यावल्यां॥ श्लो०॥ विष्णोर्नामैवपुंसः श
मयहरत्तुणएमुत्यादयच्छ ब्रह्मादिस्थानभोगाद्विरतिमथगुरुश्रीपदद्वंद्वभक्तिं॥ तत्वज्ञानंचविष्णो॥
हमृतिजननभ्रांतिवीजंचदग्ध्वासंपूर्णानंदवोधेमहतिचपुरुषंस्थापयित्वानिवृत्तं॥ १८०॥ चौ०॥
आकर्षनसंतनकेमनको॥ उच्चाटनसवहीपापनको॥ मूकबिनांसुपचादिकजेही॥ उच्चारणमैंसु
लभसवही॥ मुक्तिनारिकौंवसीकरणहै॥ मोहनंनामसुमनहिहरणहै॥ पुरश्चरणहिसाअरुहोना॥
रंचकताहिनचहियेआंना॥ कृष्णनामयहमंत्रसुतंत्रा॥ नहिकोउसाधनकैपरतंत्रा॥ रसनारंचककुवु . .

३०
१०

जवही॥ कृष्णनामफलदेतसवही॥ दोहा॥ एतीसवमहिमांकहीपद्यावलिमधिगाइ॥ कृष्णनामरसनां
रटतसुहीसकलफलपाइ॥१८१॥ श्रीकृष्णचैतन्यमहाप्रभुयानांवाक्यं॥ श्लो०॥ आकृष्टिः कृतचेतसां सुम
हतामुच्चाटनंचांहसामाचांडालममूकलोकसुलभोवश्यंचमुक्तिश्रियः॥ नोदीक्षांनचदक्षिणांनच
पुरश्चर्यांमनागीक्षतेमंत्रोयंरसनास्पृगेवफलतिश्रीकृष्णनामात्मकः॥१८१॥ चौप॥ जहांभांडीरक
वटकीछांहीं॥ श्रीदामांसोंहैगरवांही॥ सीसमोरकोमुकटविराजै॥ सोभानिरखिमदनमनलाजै॥ मु
लकुंडलश्रवननिमधिसोहैं॥ चंचलनैंनछवीलीमोहैं॥ गुंजमालमनिमालसुहाई॥ मंदहसनिमोन
तलेतचुराई॥ कटिपटपीतलसैरंगभीनौं॥ अंगलेपचंदनकोकीनौं॥ वंसीअधरधरेंकछुगावैं॥
रनिमांहिसंकेतलखावैं॥ श्यामवरणइंदीवरसुंदर॥ राजतवृंदाविपिनपुरंदर॥ हेकालिंदीप्रियन
दनंदन॥ नटवरवपुनागरजगवंदन॥ हेगोविंदमुकुंदमनोहर॥ नवकिशोरहेश्रीराधावर॥ चरण
सरणदेमोहिअपनाओ॥ दीनजांनिआनंदवढाओ॥१८२॥ छप्पै॥ मंडीरकवटईससीससेखरसि
खंडवर॥ अंगलिपतसीखंडसुवृंदाविपिनपुरंदर॥ फुलितकलितअभिरामधामइंदीवरसांवर॥
कालिंदीप्रियनंदनंदनआनंदअंबर॥ अरविंदनैनगोविंदहेमुकुंदसुंदरतनो॥ कलिकलुषहीन

ना०
३१

सुहिदीनकौंआनंदितकीजेयनो॥१८२॥श्रीगोपालभट्टानो॥श्लो०॥नांदुरीशशिखंडमंडनवरश्री
खंडलिप्तांगकवेंदारण्यंपुरंदरस्फुरदमंदेंदीवरश्यामलं॥कालिंदीप्रियनंदनंदनपरानंदारविं
देक्षणंश्रीगोविंदमुकुंदसुंदरतनोमांदीनमानंदय॥१८२॥चौ०॥जनुकौनामसबदुखहरई॥सक
लकोमनोपूरणकरई॥मनकामनाचहनरजेहे॥सोसबहीपूरणकरिदेई॥सबदेवनकेसाधनमां
ही॥फलहिचाहिमटकेसुखप्याही॥जाचपिप्रथमकोंमनोसरई॥पीछेंभवबंधनमेंपरई॥तो
सकोमहनामहिलेई॥सिद्धिहोंहिसबकारिजतेई॥मनवंछितलहिहरिकोंपावै॥तातेंगो
विंदकिनिगावै॥जिह्निकैंहोइकामनाजोई॥एहरिनामजपोनरसोई॥जोकामनाहियेमेंधरि
नामजपतहीपूरणकरिदेहै॥जसकोंमनानामतसजांनैं॥न्यारेन्यारेतिनहिवखानैं॥जाकैंउरपै
तकभ्रतिदाहै॥ब्रह्महत्यातेंछूट्योचाहै॥सोयहनाममंत्रसुखदाई॥बारइकीसजपैमनलाई॥श्री
जयजयजयश्रीनरसिंघ॥जपतमात्रनासेदारुणअघ॥निर्मलहोइसुखहिसरसावै॥कूर्मपुरा
णवचनएहगावै॥१८३॥कौर्मे॥श्लो०॥श्रीशब्दपूर्वंजयशब्दपूर्वंजयद्वयाद्युत्तरतस्तथाहि॥त्रिः
सप्तकृत्वोनरसिंहनामजप्तंनिहन्यादपिविप्रहत्यां॥१८३॥चौ०॥महापापयहिजोचहतछुडावन

सोयह मंत्र जपो अति पावन॥ वैर इकीस जपै इहि जोई॥ ताकों भय व्यापै नहि कोई॥ श्रीनरसिंह न
रसिंह जै कहई॥ फिरि नरसिंह नाम कों लेई॥ भय भंजन यह मंत्र अनूपा॥ कूर्मपुराण लिख्यो हित रू
पा॥१८४॥ कौर्मे॥ श्लो०॥ श्रीनृसिंहो नरसिंहो द्विजयाद्युत्तरतस्तु सः॥ त्रिसप्तकृत्वो जप्त्वास्तु महाभय निवार
णः॥१८५॥ वत्सर पांच कहे तिन मांही॥ नामनि की विधि वरनि कहां ही॥ जिहि वत्सर जिहि नाम प्रभावा॥
सोइ सोइ लिखों सब हित चित चावा॥ संवत्सर इक नाम कहीजे॥ पुरुष नाम यहतां मधि लीजे॥ परिवत्सर
सई जो वर्षये॥ तामें बामदेव हरि जपिये॥ इडा वत्सर अब तो जो कहिये॥ संकर्षण ए जपिकैं सुदलि नोना
चौथो अनुवत्सर अस नामा॥ तहां प्रद्युम्न सुमिरि अभिरामा॥ वत्सर यह पांचवौ वखानौ॥ तस्तैं अ
रुद्ध सु नजन प्रमान्यो॥१८६॥ विष्णुधर्मोत्तरे॥ श्लो०॥ पुरुषं वामदेवं च तथा संकर्षणं विभुं॥ प्रद्युम्नमनि
रुद्धं च क्रमाद्वत्सरेषु कीर्तयेत्॥१८७॥ दोहा॥ वरनें श्री नागोत में संवत्सर ए नाम॥ इहि विधि हरि कों सुमि
रिहै तेय है विश्राम॥ तृतीयस्कंधे विदुरं प्रति श्रीमैत्रेय वाक्य॥ श्लो०॥ संवत्सरः परिवत्सर इडावत्सर एव च॥
अनुवत्सरो वत्सरश्च विदुरैवं प्रभाषते॥१८८॥ चौ०॥ दक्षिन अयन समय जव आहै॥ तव वलिन्द सु
मरि सुख पैहै॥ उत्तरायन समयो जव होई॥ कृष्ण कहत फल पावै सोई॥ यहै विष्णुधर्मोत्तर गाई॥ अयन

मजन विधि वरनि सुनाई॥१८६॥ विष्णुधर्मोत्तरे श्रीमार्कंडेय वज्र संवादे॥ श्लो०॥ वलनद्रं तथा हलं
कीर्त्तयेद यनद्वये॥१८६॥ चौ०॥ चैत्र मास मै माधव नाम कहि॥ न जिले नरत्त आगौं जो मकहि॥ पुंडरीका
ह्म न जिय वैसा रवा॥ सव अपरण करि दैत्र मिला रवा॥ जेव सेस साई न जिलीजे॥ हरि नाम अमृत निसिदि
न पीजे॥ पद्मनाभ आषाढ उचारे॥ मन वंछित सव कारिज सारे॥ श्रावण मै केशव जस नारवे॥ सव
अघ असुन द्रुरि करि नारवे॥ वासुदेव नादों मै कहिये॥ सव सुख सुजस सुमंगल लहिये॥ आश्विन
मैं दामोदर कहि लै॥ सकल अनंद इही विधि लहिये॥ कार्तिक मास सरस सुखदाई॥ पदमना[illegible]
र कु मन लाई॥ मार्गशीर्ष मैं केशव गावै॥ मन वंछित सो ही फल पावै॥ पोष मास कहि [illegible]
यण॥ होइ सोई प्रभु मै पारायण॥ माधव कहिय माघ के मांही॥ कोटि मकर फल देत हांही॥ फा[illegible]
न मै न जिये गोविंदा॥ होइ सुखी मिटि है दुख दंदा॥ असें द्वादस मास सदाई॥ हरि के नाम अधिक फ
ल दाई॥१८७॥ विष्णुधर्मोत्तरे श्रीमार्कंडेय वज्र संवादे॥ श्लो०॥ माधवं पुंडरीकाक्षं तथा वै नारा
यणं॥ पद्मनाभं हृषीकेशं वासुदेवं तथैव च॥१॥ दामोदरं पद्मनाभं केशवं च ततत्तमं॥ नाराय
णं माधवं च गोविंदं च तथाक्रमात्॥ चैत्रादिषु च मासेषु देवदेवमनुस्मरेत्॥१८७॥ दोहा॥ हलम

पक्षप्रद्युम्नकहिहोततवहिनरसुक्षमुक्ष्म॥१॥
पक्षमेंत्योंसदासुमिरिलेंकुअनिरुद्ध॥विष्णुधर्मोत्तरेश्रीमार्कंडेयवज्रसंवादे॥श्लो०॥प्रद्युम्नमनिरुद्धंच
पक्षयोःशुक्लकृष्णयोः॥१८८॥चौ०॥सर्वनामअक्षरविदिनकहिये॥सोमवारशर्वहिकहिरहिये॥मं
गलमेंमंगलशिवनामहि॥बुधदिनस्थाणुसुमिरिसुखयामहि॥गुरवासरभूतादिकहीजे॥शुक्रवा
रमेंनिधिकहिलीजे॥शनिवासरमअव्ययजपिये॥इहिविधिसप्तवारसिधिथपिये॥मार्कंडेयवज्रसं
वादा॥योंहरिसुमिरतपावहिस्वादा॥विष्णोर्धर्मोत्तरेश्रीमार्कंडेयवज्रसंवादे॥श्लो०॥सर्वःशर्वःशिवः
स्थाणुर्भूतादिर्निधिरव्ययः॥आदित्यादिषुवारेषुक्रमादेवमनुस्मरेत्॥१८९॥चौ०॥अश्विनीमेंअनोना
क्षसनारखे॥भरणीकृष्णनामसुखराखे॥कृत्तिकाविश्वनामयदकुहई॥रोहिणिविष्णुसुमरिसुखदेवर
हई॥वषट्कारमृगशिरमेंसोहे॥भूतभव्यआर्द्रामेंजोहे॥भूतकृत्पुनर्वसुमेंगायो॥पुष्यमांहिभू
तभृत्सुहायो॥अश्लेषामेंभावबखानो॥भूतआत्मामघामेंजानो॥सोरठा॥भूतभावननामपूर्वो
फाल्गुनिमेंकह्यो॥अव्यक्तसुखधामउत्तराफाल्गुनिसुमरिये॥चौपई॥हस्तमेंपुंडरीकाक्षसुम
५ रिये॥विश्वकर्मोचित्राचितौरिये॥स्वातिमेंशुचिश्रवाउसकहिये॥मांहिविसाखासंभवलहिये॥अनुरा
धामेंभावननोमां॥ज्येष्ठामेंभर्त्तानिधिधामा॥पनवमूलमेंनामउचरिये॥पूर्वाषाढमेंप्रभुहियधरिये॥

उत्तराषाढ मैं ईश्वर सरनौं ॥ श्रवन मैं अप्रमेय जपकरनौं ॥ धनिष्टा मैं हृषीकेश उच्चारो ॥ पद्मनाभ शत
भिष हियधारो ॥ दोहा ॥ अमर प्रभु हि भजि ये सदा पूर्वभाद्रपद जांनि ॥ उत्तरभाद्रपद मैं सुमिरि अग्रा
ह्य हि मन मांनि ॥ चौ० ॥ रेवती मै शाश्वत हि सुमिरिये ॥ इहि विधि मन वंछित सब करीये ॥ दोहा ॥ विष्णु
धर्म मैं ये कहे सप्तविंस नछित्र ॥ न्यारे न्यारे नाम जपि इहि विधि होइ पवित्र ॥ विष्णुधर्मोत्तरे मार्कंडेयवज्र
संवादे ॥ श्लो० ॥ विश्वं विष्णुर्वषट्कारो भूतभव्यभवत्प्रभुः ॥ भूतकृद्भूतभृद्भावो भूतात्मा भूतभावनः ॥
अव्यक्तः पुंडरीकाक्षो विश्वकर्मा शुचिश्रवाः ॥ संभवो भावनो भर्त्ता प्रभवः प्रभुरीश्वरः अप्रमेयो हृ
षीकेशः पद्मनाभो मरप्रभुः ॥ अग्राह्यः शाश्वतो धाता कृतलक्ष्मेतान्यनुस्मरेत् ॥ देवदेवस्य नामानि कृ[त्ति]
[का]दिषु यादव ॥ १९ ॥ चौ० ॥ पडिवा के दिन व्रह्म नाम कहि ॥ द्वुतिया श्रीपति जपि मंगल लहि ॥ त्रतिया
विष्णु नाम कहि लेई ॥ चौथि कपिल कहि सो सिधि देई ॥ पांचै कै दिन श्रीधर ध्यावो ॥ षष्टी प्रभु गुन गाए रिझा
वो ॥ सातें दामोदर हि सुमरिये ॥ आठैं हृषीकेश हियधरीये ॥ नोमी के दिन गोविंद गावो ॥ दशमी मधुसूद
न चित लावो ॥ ग्यारसि के दिन भूधर राखो ॥ द्वादसि नाम गदी मुख राखो ॥ त्रयोदशी संखी मुख कहि
लै ॥ पद्मी कहि चोदसि सुख लहि लै ॥ पूर्णं दिन चक्री चित धरि लै ॥ मावस शार्ङ्ग चक्री हि सुमरि लै ॥ दोहा ॥

विष्णुधर्मउत्तरवरनियदृतिथि निर्नयकीन॥सोरह दिनए नामगुन जपिदैकोउ प्रवीन॥विष्णुधर्मोत्तरेमा
र्कंडेयवज्रसंवादे॥श्लोक॥ब्रह्माणंश्रीपतिंविष्णुंकपिलंश्रीधरंप्रभुं॥दामोदरंहृषीकेशंगोविंदंमधुसूदनं॥
भूधरंगदिनंदेवंशंखिनंपद्मिनंतथा॥चक्रिणंचमहाराजप्रथमादिषुसंस्मरेत॥१०१॥चौ०॥इतिवा
ततिनकेंहितरूही॥जिनकीबुद्धिकामनागही॥जीवनकेअंश्रह्माजपजांवन॥नामश्रनावलिरवोश्रुतिगा
वन॥नामप्रनावप्रगटजगजाना॥समदीचिंतामणीसमाना॥विष्णुधर्मविधिवरनिसुनाई॥फलनय
कसबकीमननाई॥विष्णुधर्मोत्तरेमार्कंडेयवज्रसंवादे॥श्लो०॥सर्वेवासवेदानामदेवदेवस्यनाना
नामानिसर्वाणिजनार्दनस्यकालश्चसर्वःपुरुषःप्रवीरः॥तस्मात्सदासर्वगतस्यनामग्राह्यंयथेष्टेवर
दस्यराजन॥१०२॥चौ०॥कांतकामप्रदकामग्रराधव॥कामपालहरिआनंदमाधव॥सद्नामजपेजनजे
है॥सबकामनासफलकरिदेई॥विष्णुधर्ममहिमामनहरनी॥मार्कंडेयवज्रप्रतिवरनी॥विष्णुधर्मोत्तरेमा
र्कंडेयवज्रसंवादे॥श्लो०॥कामःकामप्रदःकांतःकामपालस्तथाहरिः॥आनंदोमाधवश्चैवकामसंहूयेज सि
पेत॥१०३॥चौ०॥जीत्योचाहैशत्रुद्विजोई॥इननामनिकोंसुमिरैसोई॥परसरामनरहरिप्रभुनिरामा॥विक्रमवि
ष्णुपरमवलधामा॥नैसेहीश्रोरनाममनदेई॥शत्रुद्विजीतिविजयफललेई॥दोहा॥विष्णुधर्मवर्ननकरेहरि

ना० ४०

नामनिकेहेत॥जिहिकेरुचिहोइकामनांनामसकलफलदेत॥विस्नुधर्मोत्तरे मार्कंडेयवज्रसंवादे॥श्लो०॥
रामःपरसुरामश्चनृसिंहोविस्नुरेवच॥विक्रमश्चैवमादीनिजप्यानिविजिगीषुभिः॥१९४॥चौ०॥विद्याभ्या
सकरैजोकोई॥पुरुषोत्तमसुमिरैफलहोई॥वंधनतेंजोछूट्योचाहै॥नजिदामोदरहरखेउमांहै॥केशवक
मलनयनएनामां॥सवहीकेसारैमनकामां॥नेत्ररोगजिहिकोंहोइवाधा॥औरसकलभयग्रसितअगाधा॥
हृषीकेशयहनामसुमरिकैं॥नयवाधानासैसवडरिकैं॥सोरठा॥विस्नुधर्मकीसाखिवकुविधिमेवरनन
करी॥तातेंहरिसुखमाखिजोफलचहैसोलहै॥विस्नुधर्मोत्तरेमार्कंडेयवज्रसंवा॥श्लो०॥वि
स्मतानित्यंजप्तव्यःपुरुषोत्तमः॥दामोदरंवंधगतोनित्यमेवजपेन्नरः॥केशवंपुंडरीकाक्षमनिशं
च्या जपेत्॥नेत्रवाधासुसर्वासुहृषीकेशंनयेषुच॥१९५॥चौ०॥औषधिकर्मसमैसुखदैनों॥अच्यु
अमृतनामयहलैनों॥दारुणसमरसमयजिहिहोई॥अपराजितरटराखैसोई॥जोकोउनरविदेसम
धिजाई॥अपनैंहितकल्यानउपाई॥चक्रीसुमिरियपूरवआसा॥सुफलहोदिसवउत्तमतासा॥सुमिरहि
गदाधरणदच्छिणमैं॥अश्रुतवंदनासैंतेच्छिणमैं॥पश्चिमदिसिमैंसारंगधारी॥सुमिरणकरतहोतसुखभारी॥
उत्तरदिसमैंखड्गीराखैं॥सवपुरैमनकीअभिलाखैं॥दोहा॥विस्नुधर्ममधिवज्रसौंमार्कंडेसंवाद॥योंहरि २९

सुमिरत दिसिन मैं मिटि है सकल विषाद ॥ विष्णुधर्मोत्तरे मार्कंडेयवज्रसंवादे ॥ श्लो० ॥ अच्युतं चामृतं चैव
जपेदौषधकर्मणि ॥ संग्रामाऽग्निसुखे गच्छन् सं स्मरेदपराजितं ॥ चक्रिणं गदिनं चैव शार्ङ्गिणं खड्गिनं तथा ॥
क्षेमार्थी प्रवसन्नित्यं दिक्षु प्राच्यादिषु स्मरेत् ॥ १५६ ॥ चौ० ॥ औरसवै व्यापार नि मांही ॥ अजित अधि
प सर्वे सकदांही ॥ भक्ति सहित इन नाम तिलेई ॥ सब व्यापार सिद्धि फल देई ॥ यह विष्णुधर्मोत्तर गाई ॥
व्यापारादिक विधि समझाई ॥ विष्णुधर्मोत्तरे ॥ श्लो० ॥ अजितं चाधिपं चैव सर्वं सर्वेश्वरं तथा ॥ संस्मरेन्म
नुजो भक्त्या व्यवहारेषु सर्वदा ॥ १५७ ॥ चौ० ॥ कारिज समै छीक जब आवै ॥ नारायण इति मुख तैं गावै
अतिवृष्ट्यादिक ग्रहपीडा मैं ॥ तब उचरैय नारायण नामैं ॥ विष्णुधर्मउत्तर की वानी ॥ सो मैं लिखि है
तहित जानी ॥ विष्णुधर्मोत्तरे ॥ श्लो० ॥ नारायणं सर्वकालं क्षुतः प्रस्खलनादिषु ॥ ग्रहनक्षत्रपीडासु देव
बाधासु सर्वतः ॥ १५८ ॥ चौ० ॥ चोरवैरि सिंघादिक न यतें ॥ अंधकार व्याघ्रादि समयतें ॥ उचरै तब नृसिं
ह इहि जापैं ॥ तिहि के नयन नयह अति कांपैं ॥ अग्निदाह सुमिरिय जलसाई ॥ तापस वै तव हीन सिजाई ॥
गरुडध्वज यह नाम उचारै ॥ विषदुःखण को तुरत निवारै ॥ स्नानदेव अर्चन विस्तरई ॥ होम नमस्कारादि
क करई ॥ प्रदक्षिणां ह्व करत तहांही ॥ वासुदेव सुमिरै इन मांही ॥ द्रव्यादिक स्थापन के मांही ॥ दुष्कृत

चिंताजयजां ही॥तहां अच्युत अनंत असकहिये॥असुअनन सैं सवही सुजलनहिये॥विस्नुधर्मोत्तर एह दई॥
समझें या हि चतुर नरतेई॥विस्नुधर्मोत्तरे॥श्लो०॥दस्युवैरिनिषधेषु व्याघ्रसिंहादिसंकटे॥अंधकारेत
मस्तीव्रे नरसिंह मनुस्मरेत्॥अग्निदाहे समुत्पन्ने संस्मरेज्जलशायिनं॥गरुडध्वजानुस्मरणाद्विषवीर्यव्य
पोहति॥स्नाने देवार्चने होमे प्रणिपाते प्रदक्षिणे॥कीर्तयेद्भगवन्नाम वासुदेवेति तत्परः॥स्थापने वित्तधा
नादेरपध्याने च दुष्टते॥कुर्वीत तन्मनान्न्स्त्वा अनंताच्युतकीर्त्तनं॥१एए॥चौ०॥दुष्ट सुपन [illegible]व
तवरियां ही॥इन नाम निज्ञारैं मुखमांही॥नारायण पुनि सारंगधारी॥श्रीधर पुरुषोत्तम सुखव[illegible]
वामन खड्गी नाम सुएही॥तवही सुमिरो सहित सनेही॥दीरघ जलस्वप्न नमयपाई॥तहां सुमिरिये पद्मनं[illegible]
ई॥स्मधिकां मनां जो नर करई॥सो बलभद्र सुमिरि सुद नरई॥जिहिके पुत्र कां मनां होई॥नाम जगत्पति सु
रो सोई॥सर्व उदय कारिज कें हेता॥श्रीस नाम यह जपो सचेता॥सर्व अरिष्ट हरण जगराई॥नाम विशोक जयो
मन लाई॥पवन अग्नि जलको नयपावे॥बंधन मृत्यु समयजव आवे॥पराधीन स्वाधीन समें हूं॥कारिज
कहे यहां जितनैं हूं॥इनमें वासुदेव जप करिले॥नयनिवारि आनंद निज्ञरिले॥दोहा॥विस्नुधर्मोत्तर
कह्यो सव नय हरण उपाये॥सिधि सव हिचाहे लह्यो वासुदेव नित गाये॥विस्नुधर्मोत्तरे॥श्लो०॥नारायणं

शार्ङ्गधरं श्रीधरं पुरुषोत्तमं ॥ वामनं खड्गिनं चैव दुःस्वप्ने सदा स्मरेत् ॥ महार्णवादौ पर्य्यंकशायिनं च नरः स्म
रेत् ॥ वलनदं समुद्धार्थसारकर्मणि संस्मरेत् ॥ जगत्पतिमयत्यार्थं स्तुवन्भेक्त्यानसीदति ॥ श्रीशं सर्वान्युदपि
केकर्मण्याभ्युप्रकीर्त्तयेत् ॥ अरिष्टेषु ह्यशेषेषु विशोकं च सदा जपेत् ॥ मरुत्प्रपाताग्निजलबंधनादिषु मृत्यु
षु ॥ स्वतंत्रपरतंत्रेषु वासुदेवं जपेद्बुधः ॥ २०० ॥ चौ० ॥ प्राणीन की नाम सब ही मैं ॥ अधिक प्रीति रुचि होइ जिही
मैं ॥ नेह सहित जोइ नाम विचारै ॥ सोई सकल मनोरथ सारै ॥ विष्णुधर्म जैसी विधि वरनी ॥ ताही भांति
हि सब करनी ॥ विष्णुधर्मोत्तरे ॥ श्लो० ॥ सर्वार्थशक्तियुक्तस्य देवदेवस्य चक्रिणः ॥ यद्यात्तिरोचते नाम
तत्सर्वार्थेषु कीर्त्तयेत् ॥ सर्वार्थसिद्धिमाप्नोति नाम्नामेकार्थतायतः ॥ २०१ ॥ चौ० ॥ जल मैं तिरत लगै [illegible]
महि ॥ कूर्म वराह मत्स्य जपि नामहि ॥ अग्नि जरावत तव नय पावै ॥ त्राजिष्णु सुमिरत हि न सावै ॥ गरुडध्व
ज नाम हि जपि नाई ॥ सकल सर्पपद नितैं छुटि जाई ॥ दोहा ॥ विष्णुधर्मोत्तर ग्रंथ मे आपद हरण उपाय ॥ इहि
दुखतें छुट्यो चहै सु गरुडध्वज गुन गाय ॥ विष्णुधर्मोत्तरे ॥ श्लो० ॥ कूर्मं वराहं मत्स्यं वा जलप्रतरणे स्मरेत्
भ्राजिष्णुमग्निजनने जपेन्नामत्वखंडितं ॥ गरुडध्वजानुस्मरणादापदो मुच्यते नरः ॥ २०२ ॥ चौ० ॥ सिररोगी ज्व
रकैं नयनी त्यो ॥ विरवरवायोरण चाहै जी त्यो ॥ सोवत नटदेव नय करई ॥ तव ही नय सागर सैं तरई ॥ खेती

कह्योचहैहेजुकिसांनो॥सोईहलायुधसुमिरिसुजांनो॥जोवणिजीकलहेतउमांहे॥उदयविखें मंगलकेंाचा
हे॥विस्नुनामसुंदरमुखलीजे॥सिद्धिसवैहीकारिजकीजे॥भ्रवतहिविस्नुनाममुखलीजे॥सोवतमाध
वनामकहीजे॥भोजनसमैंगुविंदकहोजन॥सवकारिनमैंनजिमधुसूदन॥विस्नुधर्मोत्तरनीकेंजा
नै॥सवविधिनामघनावववखांनै॥विस्नुधर्मोत्तरे॥स्लो०॥ज्वरजुष्टशिरोरोगविषवीर्यंचशाम्यति॥
वलभद्रंतुयुद्धार्थीहृष्यारंभेहलायुधं॥उत्तारणंवणिज्यार्थीवाममभ्युदयेन्टप॥मांगल्यंमंगलंवि
स्नुमांगल्येषुचकीर्त्तयेत्॥उत्तिष्टन्कीर्त्तयेद्विस्नुंप्रस्वपन्माधवंनरः॥भोजनेचैवगोविंदंसर्व
धुसूदनं॥२०३॥चौ०॥केतेइकजनयहमतगंनैं॥ऐसैंनामघनावववखांनैं॥औसधिविस्नुकहत
लहिये॥भोजनकरतजनार्दनकहिये॥पद्मनाभसोवततिहिंधरियां॥कहियप्रजापतिसंगमवरियां॥
जवसंग्रामभूमिपगधारै॥क्रोधयुक्तचक्रीहिसम्हारै॥स्थानभिष्टसोसुमिरोवांवन॥विखहरनजिना
रायणपावन॥प्रियमिलापमैंश्रीधरकहिये॥जलमैंकोलरूपचितगहिये॥अग्निज्वालभयजहांसताई॥त
हांसुमिरणकरियेजलसाई॥विस्नोंधर्मोत्तरदेई॥सवविधिजनजोगिहरियेई॥विस्नुधर्मोत्तरे॥स्लो०
औषधेचिंतयेद्विस्नुंभोजनेचजनार्दनंशयनेपद्मनाभंचसंगमेचप्रजापतिं॥संग्रामेचक्रिणंक्रुद्धंस्थान

वंशेत्रिविक्रमं॥नारायणंवियोत्सर्गेश्रीधरंप्रियसंगमे॥जलमध्येतुवाराहंपावकेजलशायिनं॥२०४॥चौ०।
वनमैंनरहरिसुमिरणकरनौं॥गिरिमारगरघुनंदनसरनौं॥गोविंददुष्टस्वप्नकौंनासै॥मधुसूदनकहिसुद्ध
प्रकासै॥छलकरिवेमैंवांमननामा॥सुमिरणकरतसिद्धिहोइकांमां॥सवकारिजमैंसुमिरोमाधो॥इहिवि
धिहरिनामकहिआराधो॥॥विष्णोंधर्मोत्तरे॥श्लो०॥काननेनरसिंहंचपर्वतेरघुनंदनं॥दुःस्वप्नेस्मरगोविंदंवि
शुद्धौमधुसूदनं॥मायासुवामनंदेवंसर्वकार्येषुमाधवं।।२०५॥चौ०॥जेतेकारिजनहींवखांने॥तहांकरिश्र
द्देवहहिगांने॥औरकुकारिजकैआरंना॥नामसमर्थहरनदुखदंना॥जिहिऋतिरतितिहिनामहिलीजे॥तोना
सवहीसिद्धिकहीजे॥दोहा॥विष्णुधर्मोत्तरविधिकहतसवसिधिकरनंदनंद॥नामसकलफलदेतहैनाटेव्रज
चंदगुविंद॥विष्णुधर्मोत्तरे॥श्लो०॥कीर्त्तयेद्वासुदेवंचअनुक्तेष्वपियादव॥कार्य्यारंभेतथाराजन्यथेष्टंनाम
कीर्त्तयेत॥२०६॥चौ०॥एसबनामकृष्णहीकेहै॥मनवंछितसाधनसिधिदेहैं॥तातेसबकारिकेमांही॥सुंदरन
किहियेसरसांही॥कृष्णनामयहलेऊसुहायो॥कृष्णकहतसबकैहैनायो॥दोहा॥विष्णुधर्मोत्तरलिखिव्योसव
सिधिदायकनाम॥तातैंसुमिरिसुजोननेंकृष्णसकलसुखधाम॥विष्णुधर्मोत्तरे॥सर्वाणिनामानिहितस्यराज
न्सर्वार्थसिद्धौतुभवंतिपुंसः॥तस्माद्यथेष्टंखलुकृष्णनामसर्वेषुकार्येषुजपेतनित्या॥२०७॥चौ०॥नामप्रभाव

अपार अनंता॥ ताको कोउ न पावत अंता॥ तदपि जथामति संग्रह कीनी॥ सास्त्र सम्रति की साखि नवीनी॥
नामी हू तैं अधिक नाम है॥ अमित प्रभाव अनंद धाम है॥ नामी एक धाम ही मांही॥ राजत है निज रूप सदा ही॥र
कोटि कोटि ब्रह्मांड निराजै॥ नाम प्रताप लोक तिहुं गाजै॥ जीव करन भव सागर पारा॥ नाम अपार हौं प्रभु अवता
रा॥ नामी आंखिन आगे आवै॥ तव ही हरिजन दरसन पावै॥ नाम खैंचि नामी कौं लावै॥ प्रगट द्रगनि आगैं द
रसावै॥ नामी आइ जुगा हो होई॥ बिनु जांने नपि छांनि तिय सोई॥ को हो तुम यों पूछिय ताही॥ नाम कहै तब
वे जान्यौं जाही॥ तव ही ताकौं आदर दीजे॥ प्रगट प्रमांन तास सुनि लीजे॥ काल सवन के हत न उप[illegible]रे
कारन आय जडराई॥ जहां मुचकंद गुफा मधि जाई॥ दरसन दियो न्रपहि गति दाई॥ अति सुंदर कोउ है[illegible]
राजा तहां न प्रभु पहिचांनै॥ तब राजा पूछी तुम को हो॥ मेरे मन कौं अति सय मोहो॥ सुनि न्रपति मम[illegible]
सुनाऊं॥ वासुदेव है कम कहाऊं॥ नाम लियो जब प्रभु पहिचांने॥ अस्तुति करि हरि कौ सनमांने॥ असो
जांनौं नाम प्रभाव ही॥ यों नामी कौं नाम जनावहि॥ जुग जुग मांहि समय जब होई॥ तब ही प्रभु कौ प्रगट सो
ई॥ जा समये जिहि दरसन देई॥ हो हैं जीव कृतारथ तेई॥ जग मैं असुर भय जित नेही॥ तिन हि मारि कैं सद
गति देई॥ भक्तन कौं साक्षात उधारैं॥ तामैं पात्र अपात्र विचारैं॥ नाम उद्धारत सकल जिहांनै॥ पात्र अपात्र

कहुं नतुर आने॥ नामसवनिकौं सदगतिदांनी॥ नामीतें गतिलहै प्रमांनी॥ नामीप्रगटहोंनमर्जीदा॥ नामसदाही
सहि अनादा॥ नामीनित्यरहतइककांई॥ नामप्रगटसवहीजगमांही॥ प्रगटरूपप्रभुहोतजहांहै॥ अंधनिद
रसनहोतकहांहै॥ अंधवधिरहूकौंहरिनामा॥ सुखनमिलैसवसारेकांमां॥ जोकदाचिकोऊकहिआसे॥
गूंगोनामउचारेकसे॥ तिनकौंरामकृपाएअंका॥ कागदमेंलिखिदेहुनिसंका॥ तिनअंकनकोदरकृपा
रिकै॥ दरसनमात्रनामकोजापा॥ मुक्तिकरैकाटसवपापा॥ नैंननिहीतेंदीखनामी॥ नामसवहिस्यार॥ मध
सुखधांमी॥ नामीनैंननिहीदरसावे॥ नामअनेकभांतिअपनावे॥ जनममरणनामछुटावे॥ तांयेप्रसंनोना
मरटावे॥ नैंननितेंअछिरलखिसुनिये॥ श्रवननिनामललितधुनिसुनिये॥ लिखेनाममुद्रानिजदेह॥
नामअंगरूठीपहरिसनेह॥ इहिविधिनामअंककवधारे॥ महापातकिहितकउधारे॥ नामीगननेंसुजीव
उवारे॥ नामअमितजीवनकोंतारे॥ इहांप्रमांएवचनसुनिलीजे॥ रामनामअमृतरसपीजे॥ २०८॥ हनुम
न्नाटकमेंहनुमंता॥ कहतसुनायसुनतसियकंता॥ रामनामतुमतेंअधिकाई॥ इहमेरेमननिहचेआ
ई॥ तुमतोएकअयोध्यातारी॥ नामत्रिलोकीसकलउधारी॥ श्लो०॥ रामत्वत्तोधिकंनामइतिमेनिश्चिता
मतिः॥ त्वयैकातारितायोध्यानाम्नातुभुवनत्रयं॥ २०९॥ चौ०॥ नामसवहिदैनवनिधिनावा॥ जुगल

ना०

५३ अमको अमितप्रभाव॥जुगलहिनामपरमफलदेही॥नामजपनकोसारयहेही॥केवलनामकोदो
सवखान्यो॥शास्त्र मोहियह वचनप्रमान्यो॥सीताराम नाममन्त्र सकाहिये॥राधाकृष्ण कहियसुखलहि
ये॥इन नामकीलज्जा आवै॥श्री जुतराम कृष्ण कहिगावै॥२१०॥श्रीयह नामप्रियाको जो मौं॥तंत्रमां
हि सोई वचनप्रमानौं॥गौरतेज विनु स्याम हि सेवे॥नलीभांतिके भावनियमई॥गौरतेज विनु स्याम हि
ध्यावै॥सोवह नरपातकीकहावै॥तंत्रे॥श्लो०॥गौरतेजो विना यस्तु श्यामं तेजः समर्चयेत्॥जपेद्वा ध्याय
ते वापि स भवेत्पातकी शिवे॥२११॥चोपई॥केवलराम कृष्णके नामहि॥सुमिरत दोस कह्यो लिखियाम
हि॥त्यों राधा जान कि हि जपांही॥तामैं दोस लगै कछु नांही॥कृष्णचंद्रके मुखकी वानी॥सो ही लिखि दैं इहा
वखानी॥२१२॥मेरे नाम लछ जो लेई॥जसो होंय सन्तति दितेई॥~~एकवेरउचरैजोराधा~~॥तसो होंते मम अन्न
~~तिदितेई~~॥एक वेर उचरै जो राधा॥तसौ होउं प्रसन्न लहि साधा॥दोहा॥स्कंदपुराण एवखान ही है॥अत्र सु
सुखधाम॥लछ नाम मम नाम सम यक प्रियाको नाम॥स्कांदे॥श्लो०॥मन्नाम लक्ष जापेन प्रीतिर्मे जायते य
था॥राधोच्चारण मात्रेण प्रीतिर्मे जायते तथा॥२१३॥चौ०॥कृष्णनाम कह वार हजारा॥ताको जो फल पावे सा
रा॥एक वेर राधा अस कहई॥सो फल नलीभांति सो लहई॥तंत्र मोहि वनैन कस्यो राधा नाम प्रभाव॥वारती ५४
॥दो०॥

सौंशिवकहतसुमिरिक्रियाकरिचावे॥श्लो०॥कृस्ननामसहस्रेण यत्फलं लं[illegible]॥[illegible]नेसा[illegible]त्राप्नोति
राधोच्चारणमात्रतः॥२१४॥चौ०॥एकवेरराधाकहकोई॥तवहिकृस्नआकर्षै सोई॥[illegible]हिजि
हिजिहिवेमो॥सुमिरैराधाहियधरिनेमो॥तिनकोअौरसकलपुरुषारथ॥तुछलगैसवजितस्वारथ॥
राधानामसुछापविचित्रित॥करैंकृस्ननिजअंगहिचित्रित॥प्रीतिसहितजपराधाराधा॥करतकृस्नति
यनेहअगाधा॥दोहा॥हेराधेतुवनामकेअसअहारसुखसार॥मेरीरसनामैंफुरोहिछरवारंवार॥मच्छे
मोराधानामकीकहीसुधानिधिगाय॥वरनीश्रीहरिवंसजूरसिकनिकौंसमफाय॥सुधानिधिश्रीहरि
वंसचंद्रवाक्यं॥श्लो०॥यज्जाप्तंसकृदेवगोकुलपतेराकर्षकंतत्क्षणंयत्रप्रेमवतांसमस्तपुरुषार्थे
षुस्फुरेत्तुच्छता॥यन्नामांकितमंत्रजापनपरःप्रीत्यास्वयंमाधवःश्रीकृस्नोपितवाद्भुतंस्फुरतुमेराधे
तिवर्णद्वयं॥२१५॥चौ०॥श्रीकालिंदीतीरसुहाई॥मंदिरकुंजवेवितहांजाई॥करिआसनजोगेंद्रसुनां
ती॥ध्यावोरीधेमधुलकमतिमांती॥श्रीराधापदपंकजजोती॥कोटिचंद्रसमकोतिउदोती॥असोध्यानक
रतहैंप्यारो॥नेहरसासवमेंमतवारो॥वैंनकहतनैंननिजलधारा॥उचरतराधावारंवारा॥राधाजस
अद्भुतआनंदा॥तिहिरसमांहिछकोनंदनंदा॥हिहारविहाराराधाराधा॥साधाकरणहरणभववाधा॥

ना०
४५

यह राधा जप परम सुतंतर ॥ मेरे हिय मैं फुरो निरंतर ॥ यह सु सुधानिधि ही की वांनी ॥ हित हरिवंस सलिखी रस सांनी ॥ राधासुधानिधौ ॥ श्लो० ॥ कालिंदी तट कुंज मंदिर गतो योगींद्रवत्तत्पद ज्योतिर्ध्यानपरो सदा जपति यो प्रेमाश्रुपूर्णो हसि । केनाप्यद्भुतमुल्लसद्रतिरसानंदेन संमोहितो सा राधेति सदा हृदि स्फुरतु मे विद्यापरा द्व्यक्षरी ॥ २९६ ॥ चौ० ॥ राधा नाम रहस्य जतायो ॥ निगम न निज धन जानि छिपायो ॥ गूढ राधे का नाम निरंतर ॥ जपि हौं और न या तें कछु पर ॥ रसना और नाम न हि लेहैं ॥ श्रीराधा ही के गुन गेहौं ॥ परम रसिक सिरोमणि राधारमनी ॥ पिय मन हरन रूप निधि कमनी ॥ नव सत साजि सिंगार अंग गनी कै ॥ करि अभिसार चली दिसि पी कै ॥ संध्यास मय पुलिन की ओरै ॥ देषत मधुर हृग निकी कोरै ॥ जे पद चपल चलत त्रिभुवन मैं ॥ तेई पद कंज बसहु मो मन मैं ॥ दोहा ॥ गोस्वामी विठ्ठल प्रभु सब विधि परम सुजान ॥ श्रीमद्राधा नाम को निज मुख कीयो वखांन ॥ श्रीगोस्वामी बिठ्ठल नाथ जी मन्त्राशय या नां व्यक्य ॥ श्लो० ॥ रहस्यं श्रीराधेत्यखिल निगमानां मिव धनं निगूढं मद्वाणी जपतु सततं जातु न परं ॥ वदेय हृद्भूमौ वेणु तिनगमनाया तिरनसंचलत्तस्याश्चंचच्चरण युगमास्तां मनसि ॥ ताकरु ॥ चौ० ॥ श्रीवेद हां को तत्र सैं कहई ॥ शास्त्र पुरांण वचन कों गहई ॥ कही नाम की महिमा जो राधा नाम प्रवेर्को सार कहुं मतै

५४

सव नर सनये कतारथ चहिय॥ ताको बुद्धि व्रतित नरक हिय॥ फिरि संसार न हूं [illegible]॥ नाम॥ क्यों यह जग
सव ज्यों को त्यों ही॥ मोसों कर एक हिये याको॥ समाधान अव करिये ताको॥ शास्त्र वचन कहि कैं स
मझाउं॥ तेरो सव संदेह नसाउं॥ व्याली करत नाम अपराधा॥ तातें पातक होत अगाधा॥ तिहि तें प
लन यथारथ होई॥ ते पातक दस सुनि लै सोई॥ निन पापनि तें बचिवे हेता॥ कहुं तिन हि सुनि होइ स
चिता॥ श्रुति अरु स्मृति पुराण लह्यो है॥ नाम महातम वरनि कह्यो है॥ ताहि वडाई मात्र हि जानें॥ अ
र्थवाद करि कैं मति मानें॥ प्राणिन कें जिय रुचि उपजाई॥ तातें करी पुराण वडाई॥ ऐसें जे जानें मन मां
ही॥ कवहुं नर्क तें छूटें नाही॥ यह अपराध एक कहि दीनों॥ जैमिनि संहिता वर्नन कीनों॥ जैमिनि
संहितायां॥ श्लो०॥ श्रुति स्मृति पुराणेषु नाम माहात्म्य वाचिषु॥ येर्थवाद इति ब्रूयुर्न तेषां निरयक्ष
यः॥२१८॥ चौ०॥ हरि को नाम विश्व उपकारी॥ सर्व सेव्य सद्भुति व्रतधारी॥ बुद्धिवान नर यह व्रत धरई॥
नामापराध कवहुं न हि करई॥ श्लो०॥ तस्मिंश्च भगवन्नाम्नि जगदेकोपकारिणि॥ विश्वैक सेव्ये मतिमा
न् मराधान् विवर्जयेत्॥२१९॥ चौ०॥ सव अपराध करै जो कोई॥ महापातकी हू जो होई॥ ऐसो उ हरि को आ
श्रय करई॥ घोर पाप सागर तें तरई॥ हरि अपराध करै खल कोऊ॥ नाम सरण होइ हित सुनि सोऊ॥ तो वह

तिहि पातकतैं छूटै॥ ताके सव जनव वंधन टूटै॥ नाम परम तारक है ताको॥ जो अपराध वनै कछु याको॥
परम सुहृद ये नाम वखानें॥ तिनके जो अपराध हि गनें॥ सो नर अधो लोक मै परई॥ त्रिविधि ताप तापनि
तें जरई॥ नरक पात ही होइ तही है॥ या मक कछु संदेह नही है॥ दोहा॥ यह महिमा वकुस्यो करी पद्मपुराण
उचार॥ हरिजू के अपराध तै नाम छुडावन हार॥ यत उक्तं पाद्मे श्री नारदं प्रति सनत्कुमारेण॥ श्लो०
सर्वापराधकृदपि मुच्यते हरिसंश्रयः॥ हरेरप्यपराधान्यः कुर्य्याद्द्विपदपांशुनः॥ नामाश्रयः कदाचि
त्स्यात्तरत्येव स नामतः॥ नाम्नोपि सर्वे सुहृदो ह्यपराधात्पतत्यधः॥२२०॥ चौ०॥ नारद जू सों सनतकु
मारा॥ पद्मपुराण मांहि कहैं सारा॥ दस विधि नाम पराध जनाऊं॥ न्यारे न्यारे वरनि सुनाऊं॥ हरिज
नन की निंदा जोई॥ वड अपराध नाम को सोई॥ जन्म जन की निंदा करजे ई॥ दो खी वडे नाम के तेई॥ जिनतैं
महिमा प्रगटी ऐसें॥ संतन की निंदा सहे कैसें॥ अपराधन मैं मुखिया गायो॥ ताही तैं यह प्रथम जनायो॥
लीला नाम रूप प्रभु प्यारे॥ तिनकौं हरि तैं जांन तन्यारे॥ यह अपराध दूसरो जांनो॥ गुर अपमान तीसरो ४१
मांनो॥ वेद सास्त्र की निंदा गांने॥ यह चौथो अपराध वखानें॥ नाम महातम झूठे जांनैं॥ यह पंच
म अपराध प्रमानैं॥ नाम महातम मसुनि चित धरई॥ तिहि कैं वलतें पतरा आ नामप्रवेदर होइ अपरा

धहि करिहौं ॥ हरिकौ नाम सुमिरि कैं हरिहौं ॥ ऐसी भांति नाम जिहि लीनौ ॥ हर्यौ हि [illegible] ॥ नाम पाप कहि दीनौ ॥
होम दान व्रत और सुधर्मा ॥ और कु जिते कहे सुभ कर्मा ॥ तिन हि समान नाम कौ गनई ॥ यह अपराध
सातवौं ननई ॥ हरिकौ नाम प्रभाव अपारा ॥ ताकौ जो न हि करै विचारा ॥ यह अपराध आठवौं कहई ॥
कौ कुएक ऐसी विधि गहई ॥ जे कोउ प्रगट विमुख दरसाई ॥ नाम विखै जिहि श्रद्धा नाही ॥ वहनी के
कबु सुने न ताही ॥ जोरावरी नाम कहै जाही ॥ वहै तन कहू कां न न आनै ॥ यह नवमौं अपराध सुजा
नै ॥ श्रवन सुनैं हरिनाम प्रभावै ॥ तिहीं नाम सौं प्रीति न लावै ॥ सु निहू कैं अनुराग न कीनौ ॥ दसमौं पाप
यहै कहि दीनौ ॥ यहै नाम मम जीवन अधीनौ ॥ मो सम और न कोउ प्रवीनौ ॥ केते नाम लेत जग जेहै ॥
मो सम और नाम को लेहै ॥ यह अपराध ग्यारहौं भाख्यौ ॥ कहत कछु संदेह न राख्यौ ॥ नाम लेत अभि
मान न कीजे ॥ निरभिमान ह्वै नाम हि लीजे ॥ निर्मल मन करि नाम हि गावै ॥ असत वासना दूरि वहावै ॥ त
ए ते आप हि नीचौ जानैं ॥ तरु सम सहन सीलता आनैं ॥ आप मान मन हूं न हि लावै ॥ औरन कौं सनमान
बढावै ॥ असी विधि हरि नाम उचारै ॥ नाम नेम गाढो हिय धारै ॥ यह चैतन्य चंद्र की वांनी ॥ इहि साधन कौं
करि हित मांनी ॥ यहां श्री कृष्ण चैतन्य चंद्र जी कौ वचन है ॥ श्लो० ॥ तृणादपि च नीचेन तरोरपि तितिक्षुणा ॥

ना। सुमि: च: नीचोरह जे: व तकी नाई: सहण

अपतोऽमानी ःश्रीतन मान ताः कीर्त्तन करजे सदा हरिः ॥१॥
२जीसुः कवासुः कतैः तहीः एः तीनिदानः

१ सतपत्लोकाः ॥

ना० ४७ अमानिना मानदेन कीर्त्तनीयः सदा हरिः ॥१॥ यदुक्तं पाद्मे नारदं प्रति सनत्कुमारेण ॥ सतां निंदा नाम्नः पर
ममपराधं वितनुते यतः ख्यातिं यातं कथमु सहते तद्विगर्हां ॥ शिवस्य श्री विष्णोर्य इह गुणनामादि
सकलं धिया भिन्नं पश्येत्स खलु हरिनामाहितकरः ॥ गुरोरवज्ञा श्रुतिशास्त्रनिंदनं तथार्थवादो हरिना
म्नि कल्पनं ॥ नाम्नो बलाद्यस्य हि पापबुद्धिर्न विद्यते तस्य यमैर्हि शुद्धिः ॥ धर्मव्रतत्यागहुतादि सर्व
शुभक्रिया साम्यमपि प्रमादः ॥ अश्रद्दधाने विमुखेप्यशृण्वति यश्चोपदेशः शिवनामापराधः ॥ श्रुत्वा
पि नाममाहात्म्यं यः प्रीतिरहितो नरः ॥ अहं ममादि परमो नाम्नि सोप्यपराधकृत् ॥ २२१ ॥ चौ० ॥ नामापराध
कदाचित होई ॥ तिहि तें कैसें छूटै सोई ॥ तो सदैव हरि कीर्त्तन करई ॥ नामापराध तिही तैं टरई ॥ सनत
कुमार वचन हि धारै ॥ नाम ही नाम पाप कों जारै ॥ सनत्कुमारवाक्यं ॥ श्लो० ॥ जाते नामापराधेपि प्रमा
देन कथंचन ॥ सदा संकीर्त्तयन्नाम तदेकशरणो भवेत् ॥ नामापराधयुक्तानां नामान्येव हरंत्यघं ॥ अ
विश्रांतिप्रयुक्तानि तान्येवार्थकराणि च ॥ २२२ ॥ चौ० ॥ कृष्णचंद्र को एक हु नामा ॥ मंगलरूप महा अ
भिरामा ॥ जाकी वाणी सौं कहि आवै ॥ अथवा सुमिरण ही चित लावै ॥ अथवा श्रवण नाम धुनि परई ॥
तऊ सकल पापन कौं हरई ॥ शुद्ध कृष्ण को उधार सनें धारै ॥ कोउ कि शान री अभ्या मध्य कोऊ कोन्हो

ऐसे कहि जांनै ॥ कान्हूड़ा अस गावत गांनै ॥ नाम बीच को अंतर कन आवै ॥ कै सद्धि नाम कहो ज्यों भावै ॥
शुद्ध अशुद्ध न कछू विचारै ॥ कृष्ण नाम सब ही कों तारै ॥ कृष्ण नाम यह परम अनूपा ॥ भुक्ति मुक्ति सुद मंग
लरूपा ॥ तनयो धन हित तिहि को लेई ॥ लोभ न मोह बस कछु चित देई ॥ पद्मपुराण कही विधि असी ॥ सो
मैं लिखी नाम विधि तसी ॥ पाद्मे ॥ श्लो० ॥ नामैकं यस्य वाचि स्मरणपथगतं श्रोत्रमूलं गतं वा शुद्धं वा
ऽशुद्ध वर्णं व्यवहित रहितं तारयत्येव सत्यं ॥ तच्चेद्देह द्रविण जनता लोभ पाखंड मध्ये निक्षिप्तं स्यान्न फल
जनकं शीघ्रमेवात्र विप्र ॥ २२३ ॥ चौ० ॥ हरि के नाम अमित महिमा को ॥ कों न पार पावत है ताको ॥ मनु मुनीस
जोगेंद्र महेसा ॥ वेद भारती सेस गनेसा ॥ नाम प्रभाव कहन मन मांही ॥ तिनहू की सामर्थ्य नांही ॥ तो मैं मं
द बुधि किमि गांऊं ॥ तासु पार कसी विधि पांऊं ॥ श्लो० ॥ महिम्नां नाम प्रियस्य नाम्नः पारं गंतुं मनीश्वरा ॥ मनवो
पि मुनींद्राश्च कथं तं क्षुद्र धीर्भजे ॥ २२४ ॥ जगन्नाथेन रचिता पुराणवचनैः शुभा ॥ श्री कृष्ण नाम मालेयं
सत्कंठेऽस्तु चिरं स्थिरा ॥ २२५ ॥ चौ० ॥ मित्र एक मेरो रंग भीनौं ॥ जाहि गुपाल आपनो कीनौं ॥ सरस सरूप
चंद्र एह नांमा ॥ भांन भजन मधि अति अभिरांमा ॥ १ ॥ श्री रूप रसिक जू जिहि अपनायो ॥ तिहि दंपति सं
पति मन लायो ॥ ताकी कि हि विधि करौं बडाई ॥ दिन प्रति प्रीति करत अधिकाई ॥ २ ॥ भजन उपासन ऊनौं

जानैं॥संतनकौं अतिहीसनमांनैं॥जीवनपरअतिकृपाघनेरी॥कह्योवचनसुनमोतनहेरी॥३॥वे
स्नवमहिमांतोतुमगाई॥सोसंतनिहमगाइसुनाई॥नाममहातमसंग्रहकीजे॥नामसुजसगावतसु
खलीजे॥४॥इहिकलिनामसमाननकोई॥अवतौसरणगहियेसोई॥यहराधिकादासकहीहै॥तव
तौमेरीमतिउमहीहै॥५॥तदपिहीयमैंकियोविचारा॥नामसुजसकौवारनपारा॥हौंअतिअधमख
लनसिरमोरा॥मोसमअघीमलिनजगथोरा॥६॥कोटिअजामेलसमनहिलागे॥सुकृतपुंजमोहिदे
खतभागे॥वंसीअलिअपनौंकियोजातें॥संतदेतमोहिआदरतातें॥७॥जिहिगुरुसंतलेहिअपना
ई॥किहिजगमैंनहिकीरतिपाई॥शुकशौनकसूतहिनिजुजांन्यों॥तिहिप्रनागीवनोगीतवखान्यों॥
८॥बालमीकसतसंगप्रभावा॥अगनितश्रीरघुपतिजसगावे॥श्रीगुरुचरणहियमेंधारी॥कछुक
नामकीरतिविस्तारी॥९॥जेजेवचनदृष्टिमेंआये॥तिनकौंसंग्रहकरिलिखवाये॥कितेकजीव
संसकृतमांही॥श्लोकअर्थककछुसमझतनाही॥१०॥तिनकेंहेतकरीयहभाखा॥तेउसमझिलहैंअ
भिलाखा॥जुगलनामकौअमितप्रभावा॥तिहिअधुरियकरियचितचावा॥११॥जुगलनामही
जीवनिमेरी॥मैंदृगसरनगहीतिहिकेरी॥राधाहरलअंकयेचारी॥हेरसनराधानामसरनअपियारी॥१२

४

कलिमें और न साधन कोइ॥ नाम कुं तिहूं सब फल होई॥ तातैं होइ यहै व्रतधारी॥ नाम महिं सबकी जी
वनी वारी॥१३॥ दिवस कहु एक नाम मुख जापी॥ तरे अजामेल हू से पापी॥ गणिका हरि हरिनाम उचारी॥
चढि विमान वैकुंठ सिधारी॥१४॥ धकवगलो निवस तुम स्यो जाई॥ नाम प्रताप कष्ट लग तिपाई॥ जन
प्रहलाद गर्भमें सुन्यो॥ नाम ही सार यह मन गुन्यो॥१५॥ तिहि बलतें सबही परगाज्यो॥ प्रगट होइ सं
तन मधि राज्यो॥ नारद जू हरि सुमिरनु कीनो॥ अपने बस हरि कौं करि लीनो॥१६॥ कहां लगि बरनौं
नाम बडाई॥ कोटि कोटि अधम निगति पाई॥ जिती नाम महिमा अधिकाई॥ सारद कुपें कहीं न जा
ई॥१७॥ मैं मति मंद पार किमि पाउं॥ तउ राधिका नाम हिगां कुं॥ सब पै परि श्री राधा नामो॥ तिहि सु
मिरए सो मेरो कामो॥१८॥ राधा नाम जपत है जेई॥ मोन समान लगत प्रिय तेई॥ नज दि जु राधा ना
म निरंतर॥ सदा रहों मे तिनको किंकर॥१९॥ राधा नाम कृपा यह साजो॥ मो रस नांमे सदा विरा
जो॥ मैं तो यही परम फल मानौं॥ और न कुजो साधन जानौं॥२०॥ राधा रटत जीन तें जब है॥ नरक
होकु तो डरौं न कबहुं॥ राधा नाम विना मन मेरो॥ चाहत नहिं वैकुंठ बसेरो॥२१॥ साधन फ
ल मम राधा राधा॥ परम सिद्धि राधा सुख साधा॥ राधा नाम अमित रख लतारे॥ राधा नाम लगत

ना०

८ ५९ मोहिप्यारे॥२२॥राधानामकौअमितप्रभावा॥मोपैंजातपारकिमिपावा॥रसिकसिरोमणिलालवि
हारी॥गावतवंसीमैंकहिप्यारी॥२३॥राधानामकोसुनकुप्रभावा॥शास्त्रपुराणनिवहुविधिगावा॥ली
लावतीनामएकगणिका॥ताकैनहींसुकृतकोकणिका॥२४॥श्रवणनागउदयहोइआयो॥तिहिकृति
सौंराधाजसगायो॥अधमकुतीवहजडमतिनारी॥धन्यकुंवरिताहूकौंतारी॥२५॥सोरनामइक
जेअघनस्यो॥राधानामलेतसोतरस्यो॥विल्वविप्रइकनयोसुरापी॥तिहिकैंतीनप्रुत्रअतिपापी:
॥२६॥तिनहूंराधानामहिलीनौं॥पुत्रनसहितमुक्तितिहिकीनौं॥राधामंत्रपरमरसभीनौं॥शिव
जूरिषिमृकंडकौंदीनौं॥२७॥राधानामजापतिहिकरिउं॥दुर्जेयकालजीतिनहिडरिउं॥उद्धवह
रिकोनिकटनिवासी॥कृष्णचंद्रतिहिलखिरसरासी॥२८॥परमकृपालताहिअपनायो॥हितकरि
राधानामसुनायो॥कह्योकृपाकरिहितकारणहै॥राधानामपरमतारणहै॥२९॥उद्धवएहसुहिव
कुरिवखांनौं॥राधानामसारएहजांनौं॥काएवचनमनजपिइहिनामहि॥पाइहैश्रीवृंदावनधाम
हि॥३०॥राधानामप्रतापघनांमों॥इहिप्रजायकौंहौंहीजांनौं॥कृष्णचंद्रउद्धवहिसुनाई॥सुनिम
हिमांहियप्रीतिबढाई॥ [illegible] तहिके [illegible]॥तिया [illegible] सा॥सदासर्वदातहांसुपासा॥एकरहस्यअोरद

रसोकूं ।। राधा नाम प्रभाव हिमांकूं ।। ३२ ।। कुसमोखर की तीर सुहाई ।। तहां रहे उद्धव सुखदाई ।। सो
रहसं सकल पटरानी ।। प्रीतम विरह अधिक जीय जानी ।। ३३ ।। इक दिन वज्रनाभ लिय संगा ।। रंगीस
कल प्रीतम के रंगा ।। मथुरा तें सब साज सजाई ।। उद्धव वज्र के ढिग सब आई ।। ३४ ।। उद्धव वज्र बड आद
र कीनौं ।। नयो समाज परम रंग भीनौं ।। कीर्तन करि उतम नेह लखायो ।। सबकों श्रीनाम गोत सुनायो ।।
३५ ।। नित धाम मैं सब पकुचाई ।। जहां विहार आंदे सदाई ।। ऐसो राधा नाम प्रभावा ।। बहु विधि वरनि
रसिक जन गावा ।। ३६ ।। यह नाम गोत महातम माहीं ।। कही स्कंदपुराण तहांही ।। राधा असद्धै अछिर
राजैं ।। महिमा तिनकी कहिवे काजैं ।। ३७ ।। निगम गिरा बड बुद्धि कहावैं ।। तेउ तहां प्रवेस न पावैं ।।
नारद जू आने दित मन मैं ।। एक दिनां आए श्री वन मैं ।। ३८ ।। तहां मुनिमान सरोवर आए ।। ललित
सखी के दरसन पाए ।। विविधि भांति तहां विनती कीनी ।। अपनी मन इच्छा कहि दीनी ।। ३९ ।। स्वा
मिनि को मोहि दृग निदिषावो ।। यह मेरी अभिलाष पुरावो ।। तब ललिता जू हित हिय गहिकू ।। रा
धा नाम श्रवण कहिदय कू ।। ४० ।। तिहि तैं राधा दरसन पायो ।। नारद जू को नयो मन भायो ।। वरपायो
सुख नये उ अपारा ।। गावत फिरत सुनित्य विहारा ।। ४१ ।। ऐसो अमित प्रभाव नाम को ।। अद्भुत जस

४५०
M-103

राधाप्रभावको॥ कहालों नाम महातम कहिये॥ कहत कहत जिहि पार न लहिये॥५२॥ मैं सिमहा अध
मेके सुखते॥ निकसत कृपा हेत करि सुखते॥ याको यह कारन सुनि लीजे॥ सो उहेत सरस कहि दीजे॥
५३॥ नाम ही इष्ट वेधु यह मेरें॥ भजन उपासन सरण इहि केरें॥ सर्वसु मातु पिता मम गायो॥ श्रीवंशीअ
लि मोहि बतायो॥५४॥ अली किशोरी यहै नाम कें॥ रहि सरणें सब कृपा धाम कें॥ राधा नाम सदा रसना
कहि॥ यही इष्ट दृढ हृदै निमग हि॥५५॥ तातें वार वार यह जाचों॥ स्वामिनि सदा नाम तुव राचों॥ एक रा
वरी सरन गही है॥ अबला डिली विनय यही है॥५६॥ वृंदाविपुन वास मोहि दीजे॥ दीन जानि अपनों
करि लीजे॥ रहों जाइ रसिकनि कें माही॥ विपुन विहार केलि दरसाही॥५७॥ विचरों तहां घन वन की
छांही॥ फुलन कलिंदी तीर जहां ही॥ करत केलि कल ललित किशोरी॥ रितु वसंत लखि विहरत
जोरी॥५८॥ छंद॥ जहां तीर कालिंदी कुलहल कुंवरि के कब देखिहों॥ पिय संग गलबांही दिये
लखि सफल जीवनि लेखिहों॥ ललिता हि अलि चहु वोर राजहि सरस सौंज निसा जिकें॥ तिन म
ध्य जुगल किशोर छवि लखि रहो रति पति लाजिकें॥ कव कहू कल ललित निकुंज में सजि साजि सब
वसंत के॥ कलगान तान निशा वही सुख करन राधा कंत के॥ अलि वंशिका कें संग मोहि यह रंग ५०